ISSN 2320-2858 UGC Journal No. 42684 दिसम्बर 2022
वर्ष - 11 अंक - 121

ब्रज लोक संपदा

सौजन्य : गीता शोध संस्थान एवं रासलीला अकादमी, वृन्दावन

ब्रज रज उत्सव पर विशेष

NK Group

www.nkgroup.net.in

Rera Registration No.: UPRERAPRJ9769

वृन्दापुरम

उ.प्र. सरकार की अफोर्डेबल आवास नीति के अन्तर्गत
(एक सम्पूर्ण आवासीय योजना)

MVDA APPROVED

LOAN FACILITY AVAILABLE

State Bank of India

ICICI Bank

उच्च गुणवत्तायुक्त मकान प्राप्त करने का सुअवसर

निकट जी.एल.ए. विश्वविद्यालय, एनएच-2, वृन्दावन (मथुरा)

License No. 4019/25.C/SAY/2015-16 Date 01/05/2015

राज्य सरकार अनुमोदन संख्या 307/आ.ब.-1/स.यो.-पंजीकरण/2016 लखनऊ

मानचित्र अनुमोदन २ ख्या 08/के/16-17/म.वृ.वि.प्रा./2016-17

मो.: +91-7599995000, 9837128001, 759995000

ब्रज लोक संपदा

साहित्य, कला, संस्कृति, मानविकी एवं समाज विज्ञान की अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका

संपादक :

डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा

★

सह-संपादक :

चन्द्र प्रताप सिंह सिकरवार

★

सहयोग :

डॉ. रश्मि वर्मा

★

टंकण एवं कला संयोजन :

दीपक शर्मा

ब्रज ग्राफिक्स

कार्यालय :

ब्रज लोक संपदा कार्यालय, 302, गुरुकुल रोड, वृन्दावन

मो. : 09410619265, 7017709490

Website : www.brajloksampada.com ★ E-mail : brajloksampada@gmail.com

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक

डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा द्वारा चौधरी प्रिंटिंग प्रेस, ब्रह्मकुण्ड, वृन्दावन, मथुरा से मुद्रित कराकर 302, गुरुकुल मार्ग, वृन्दावन (मथुरा) से प्रकाशित।

ब्रज लोक संपदा भारतीय संस्कृति के मासिक शोध-पत्र की पृष्ठभूमि में हमारा यह सद् प्रयास है कि भारत की क्षेत्रीय कला व साहित्य का प्रज्ञात कलेवर परिवेषण कर राष्ट्रीय भावात्मक एकता के सूत्र को परस्पर संस्कृति के आदान-प्रदान से पुष्ट करें; इसी से व्यक्ति का व्यक्तिवाद शिथिल होकर समन्वित भाव से लोक अस्मिता के रूप में विकासोन्मुख नव जीवन का स्वरूप ग्रहण करेगा।

आवेदन - पत्र

कृपया मैं व्रजलोक संपदा पत्रिका का तीन वर्ष अथवा आजीवन सदस्य बनना चाहता/चाहती हूँ। सदस्यता शुल्क.....नकद/चैक/ड्राफ्ट नं.....दिनांक ....संलग्न है।

श्री/श्रीमती/.....

पिता/पति का नाम.....

जहाँ पत्रिका मंगाना चाहते हो वहाँ का पूरा पता .....

.....

पिन..... दूरभाष/मो०.....

हस्ताक्षर

(कृपया उक्त आवेदन पत्र को हाथ से लिखकर या टाईप कराकर भेज सकते हैं)

सदस्यता शुल्क

एक प्रति- 100/-, एकवर्षीय - 1100/-

विशेष: अपना चैक/ड्राफ्ट: श्रीश्री नरहरि सेवा संस्थान के नाम से

302, गुरूकुल रोड, वृन्दावन, मथुरा, उ.प्र., पिन: 281121 पर भेजें।

बैंक का नाम - केनरा बैंक

शाखा - विद्यापीठ चौराहा, वृन्दावन

खाता संख्या - 2480101002061

आईएफसी कोड - CNRBN0002480

प्रकाशित आलेखों के विचारों से संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

शोध पत्रिका से सम्बन्धित सभी विवाद केवल मथुरा न्यायालय के अधीन होंगे।

सम्पादकीय

डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा

उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद मथुरा द्वारा विगत 1 से 11 नवम्बर 2022 पर्यन्त ब्रज रज उत्सव मथुरा, रेलवे ग्राउण्ड के विशाल रंगमंच पर देश के यशस्वी कलाकारों की साधना का मुग्धकारी प्रदर्शन अविस्मरणीय रहा, जिसकी परिचर्चा हम आगे के पृष्ठों में करेंगे।

जहाँ बिहरत नागरि अरु नागर, कुंजन आठों याम; यह ब्रजभूमि के साधक की भाव यात्रा का प्रथम पढ़ाव है। आगे की यात्रा लीलाधर की लीलाओं को अपने हृदय कमल की पंखुरियों में संजोये हुए है, द्वापर कालीन लीला चिन्हों को देख-देख कर ऐसा लगने लगता है कि यहाँ की चारों दिशायें उस मनोहर का कीर्ति गान कर रही हैं।

भक्त जब ब्रज में प्रवेश करते हैं, तो सर्वप्रथम ब्रज रज की एक चुटकी मुख में डालकर षाष्टांग दण्डवत् करते हुए लोट पोट हो जाते हैं, अनेकों बार उस युगल पद रेणु को अपलक नेत्रों से निहारते-निहारते गहरी परिकल्पनाओं में डूब जाते हैं; बालकृष्ण की लीलाओं की साक्षी यह रज; भाव जगत में भक्तों के हृदय पटल पर कनुआ के धूल धूसरित तन की एक झलक पाने को पिपासु रही है। यह रज कितने ही सन्तों के माथे का तिलक है।

श्रीकृष्ण का लीला वितान इतना मधुर है कि वह एक उत्सव के रूप में कब प्रस्तुत हो गया इसका किसी को कानों-कान भान नहीं हुआ। दीर्घ कालीन महनीय उपासना जब आनन्द की अनुभूतियों से विभोर हो उठी तो उद्दाम नृत्य की भूमियाँ उच्छलित होने लगीं, उसकी भंगिमाओं के उद्बोधन में गायन का विकल स्वर प्रस्फुटित होता रहा। नूपुरों की रसाल मंद ध्वनि रस परिवेषण में मुखर सहमति देती रही।

अन्तर्वस्तु

1.	श्रीकृष्ण अर्जुन संवाद : विषादयोग	07
2.	गोकुल संस्कृति – *राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी*	08
3.	ब्रज रज उत्सव 2022 – *चन्द्र प्रताप सिंह सिकरवार*	12
4.	ब्रज प्रेम – *कवि अशोक अज्ञ*	20
5.	ब्रज – *कपिल देव उपाध्याय*	21
6.	सप्तसमुद्री कूप : मथुरा के इतिहास का साक्षी – *लक्ष्मीनारायण तिवारी*	25
7.	पं. तोताराम शर्मा (पखावज वादक) – *डॉ. उमेश चंद्र शर्मा*	27
8.	मानव भूगोल : ब्रज संदर्भ – *डी.के. शर्मा (पर्यटक अधिकारी, मथुरा)*	31
9.	मूर्तिशिल्प – *डॉ. शिवानी कौशिक*	34
10.	उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद के प्रगति पथ	36

श्रीमद्भगवद्गीता

पश्यैता पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम्।
व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता॥

(श्रीमद्भगवद् गीता अध्याय 1-3)

हे आचार्य! अपने बुद्धिमान् शिष्य द्रुपद-पुत्र धृष्टद्युम्न द्वारा व्यूहाकार खड़ी की हुई पाण्डुपुत्रों की इस भारी सेना को देखिये। शाश्वत अचल पद में आस्था रखने वाला दृढ़ मन ही 'धृष्टद्युम्न' है। यही पुण्यमयी प्रवृत्तियों का नायक है।

गोकुल-संस्कृति

राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी

गोकुल एक गाँव का नाम है परन्तु श्रीमद्भागवत से लेकर सूर सागर तक इस शब्द का प्रयोग ब्रज के ऐसे समाज के अर्थों में हुआ है, जिसके जीवन का आधार गो-पालन है। गोकुल उस समुदाय का नाम है जो गाय पर निर्भर था और गाय ही जिसका धन था। गायों की संख्या के आधार पर वहाँ आर्थिक और सामाजिक प्रतिष्ठा मिलती थी। आज भी लोकगीत गाये जाते हैं 'नौ लख धेनु नन्दबाबा के नित नयो माखन होय। इस समाज की जीवन पद्धति के केन्द्र में गाय थीं।

इतिहासकारों ने विश्व इतिहास को चार समाजों में विभक्त करके देखा-परखा है। वन्य समाज, पशुपालक समाज, कृषि समाज तथा औद्योगिक समाज। पशुपालक समाज दुनियाँ के प्रत्येक देश में कभी न कभी वहाँ की मुख्य जीवनधारा के रूप में विद्यमान रहा है और इसका प्रमाण उन देशों की लोकवार्ता में वहां के लोकगीत, लोककथा, लोकविश्वास और रीतिरिवाजों में गाय की प्रमुखता के रूप में विद्यमान है परन्तु भारतवर्ष में गोकुल संस्कृति इतनी सशक्त, व्यापक और प्रभावशाली रही है कि आज भी गोरक्षा के प्रश्न पर राष्ट्रव्यापी आन्दोलन छिड़ जाता है वास्तव में गोकुल एक संस्कृति का पर्यायवाची है।

गोकुल का धर्म : गोरक्षा

गोदान, गोचारण, गोरक्षा, गोसेवा और गोपालन के साथ दिलीप, वशिष्ठ, रघु, नृग, पृथु और विक्रमादित्य जैसे सम्राटों और ऋषियों के नाम जुड़े हुए हैं। कृष्ण तो गोकुल का लाड़ला है ही। गोकुल संस्कृति में ऐसी अनेक लोककथायें हैं। जिनके नायकों ने गायों की रक्षा के लिये युद्ध किया था और गायों की रक्षा के लिये प्राण समर्पित कर दिये थे। अष्टछाप के कवि कुम्भनदास के पुत्र कृष्णदास जब गाय को बचाने के लिए दौड़ पड़े तो गाय तो लपककर खिरक में चली गयी परन्तु कृष्णदास सिंह की पकड़ में आ गये।

गोवर्द्धन : इन्द्र से बड़ा देवता

गोकुल संस्कृति में गाय मुख्य देव है। वह कामधेनु है। उसके अंग प्रत्यंग में कोटि-कोटि देवताओं का निवास है। गोकुल संस्कृति में पृथ्वी का रूप गाय का रूप है और उसका विश्वास है कि जब-जब धरती पर भार बढ़ेगा, तब-तब पृथ्वी गो का रूप धारण करके प्रभु के पास पुकार करेगी। गोकुल संस्कृति में चूल्हे पर सिकी पहली रोटी 'गो-ग्रास' है। गोकुल-संस्कृति के देवता गाय से सम्बन्धित है। गोपाल, गोपीश्वर, साक्षीगोपाल, गोपालसुन्दरी के साथ ही गोवर्द्धन इसलिये पूज्य है कि वह गायों की वृद्धि करने वाला है और इसीलिये वह इन्द्र से बड़ा है।

गोविन्द अभिषेक :

स्वयं कामधेनु अपने दूध की धारा से गोविन्द का अभिषेक करती है और यह गोविन्दाभिषेक गोकुल संस्कृति का इतना प्रबल अभिप्राय है कि मूर्तियों के प्राकट्य की कथाओं में गाय द्वारा दूध की धार चढ़ा आना एक प्रमुख घटनाक्रम है। श्रीनाथजी की प्राकट्य वार्ता में सद्दू पांडेय की गाय धूमर गायों के समूह में न्यारी होकर गिरिराज के ऊपर चढ़कर श्रीनाथजी के मुखारविन्द पर दूध स्रवा आती थी।

गोकुल संस्कृति के उत्सव त्यौहार :

गोकुल संस्कृति में बगला चौथ, ओघद्वादशी जैसे व्रत किये जाते हैं, जिनमें सवत्सा गो की पूजा होती है तथा गाय सम्बन्धी कहानी कही जाती है। गोपाष्टमी गोकुल संस्कृति का प्रमुख उत्सव है।

गोकुल संस्कृति की गाथा ब्रज धरती पर :

ब्रज की धरती पर कुण्ड-सरोवर-कूप, वन और गाँवों की लिपि में गोकुल संस्कृति की जो गाथा लिखी हुई है, उसके दर्शन हम गोविन्द कुण्ड, सुरभी कुण्ड, छछियारी देवी, छाछ कुण्ड, गोप की अथांई, हरजी ग्वाल की पोखर, गोपी कूप, दोहिनी कुण्ड, गो घाट, गोचर भूमि, बहुला गाय का मन्दिर, ग्वाल कुण्ड, क्षीरसागर, पयसरोवर, बच्छवन और बच्छगाम में कर सकते हैं।

हरे हरे गोबर अँगन लिपाओ सुघड़ पट मालिनियाँ :

यह कथा गोकुल संस्कृति की है जिसमें स्वयं लक्ष्मी गाय से अपने श्रीअंग में स्थान देने का अनुरोध करती हैं और गाय उन्हें गोबर में निवास करने का आदेश देती है। यही कारण है कि हरे-हरे गोबर में लीपकर आँगन में गजमोतियों के चौक पूरे जाते हैं। गोबर के बिना कोई अनुष्ठान हो ही नहीं सकता। छटी से लेकर, सतिया, गोवर्धन, स्याहू, साँझी, नाग, गौर, घरगुली तथा देवी तक की स्थापना गोबर से ही की जाती है।

पंचगव्य और पंचामृत :

गोकुल संस्कृति में गोरोचन का पवित्र तिलक है, वहीं मस्तक पर गोरज शोभित है। पंचगव्य और पंचामृत गोकुल संस्कृति की ही देन है।

क्षीरसागर और समुद्र मन्थन :

पुराणों में पृथ्वी दोहन, क्षीरसागर और समुद्र-मंथन ये तीन महत्वपूर्ण अभिप्राय (Motif) हैं। इनका सम्बन्ध गोकुल संस्कृति से है। गोदोहन तथा दधिमंथन इनका आधार है। दूध के समुद्र का अभिप्राय गोकुल संस्कृति के अतिरिक्त और कहाँ होगा ? गोकुल में ही दूध के पनारे बहने, दधिकाँदा, गोरस की कीच होने और दूध के पोखरों की परिकल्पना है। 'दूधन ते पोखर भरी घीअन जम गयी पार'।

पारिवारिक सम्बन्ध :

गोकुल संस्कृति में गाय से पारिवारिक सम्बन्ध है। वह माँ है। उसका और दूध का मोल नहीं किया जाता। ब्रज के परिवारों में जब कोई त्यौहार खोटा हो जाता है, तब वह या तो बहू बेटी के यहाँ पुत्र उत्पन्न होने पर उठता है या फिर गाय के बछड़ा उत्पन्न होने पर। विश्वास दिलाने के लिये गाय के पेंड़ भरे जाते हैं। बेटे और बेटी को

बछड़ा और बछिया संबोधन किया जाता है तब यहाँ ध्यान देने की बात है कि बेटा बेटी या बछरा-बछिया में अनुराग का भाव किस शब्द में भारी है।

गोकुल में लोकविश्वास :

गोकुल संस्कृति का विश्वास है कि गाय की पूंछ का झव्वा हिलता है तो सारे रोग दूर हो जाते हैं। बालक को नजर लग जाती हैं तो लोकांगना गाय की पूँछ से झारा देती हैं। मूल नक्षत्र में उत्पन्न बालक का गाय के पुत्र के रूप में स्वीकार करने का शान्ति-अनुष्ठान होता है। गाय का दर्शन स्वप्न में भी मंगल का हेतु है।

बाबा नन्द तो ठाड़े खिरक में :

पितृश्वरों की तृप्ति के लिये श्राद्धों में गोग्रास दिया जाता है। जितने प्रकार के दान है, उन सबमें गोदान इतना महत्वपूर्ण और आवश्यक माना गया है कि जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त विभिन्न संस्कारों में, विभिन्न अवसरों पर गोदान अनिवार्य है। 'बाबा नन्द तो ठाड़े खिरक में कर गउअन कौ दान।' विवाह में कुशा लेकर उनमें गाँठ लगाकार कन्यादाता वर के आमने-सामने परस्पर उठे हाथों में पकड़ा देते हैं। गाँठ लगे कुश श्यामा गौ और उसके बड़छे के प्रतीक हैं। गोकुल के मन में यह भाव सूत्र घर किये बैठा है कि जीवन के बाद भी गाय स्वर्ग का हेतु तथा पुनर्जीवन में मंगल का निमित्त है। वैतरणी पार करने का एक ही उपाय है गाय की पूँछ पकड़ करके ही वैतरणी के पार जाया जा सकता है।

गोकुल संस्कृति की मानसिकता :

गोलोक की अवधारणा गोकुल संस्कृति का ही विकास है। गाय भौतिक रूप में ही जीवन की रिक्तता को नहीं भर देती, वह जीवन की दृष्टि भी देती है। गाय की ऋजुता ही गोकुल संस्कृति की जीवन-दृष्टि है। सुरही या बहुला गाय का गीत गोकुल संस्कृति का राष्ट्रगीत है तथा ब्रज के साथ ही वह अन्य जनपदों में प्रचलित हैं। कजरी वन से चलकर सुरही गाय नन्दन वन में चरने गयी और साँझ हो गयी, तब लौटने लगी। वहाँ ऊंची सी पूँठरी पर एक सिंह बैठा हुआ था। बोला- री गाय, तैने मेरे द्वारा रक्षित वन में प्रवेश क्यों किया? अब मैं तुझे नहीं जाने दूँगा। गाय ने कहा- खिरक में मेरे बछरा रंभा रहे होंगे, मैं एक बार उनसे मिल आऊं। मैं वचन देती हूँ, लौटकर आ जाऊँगी। जब बछड़ों से सुरही ने सारी बातें बतायीं तो वे बोले- "बचनन की बाँधी दूधा ना पीयें हो माय" जब आगे। आगे बछड़ा तथा पीछे पीछे सुरही गाय सिंह के पास आये तो बछड़ा बोला-

आओ रे मेरे सिंह मामा पहले भखौ मोय,
ता पीछे या माऐ बिनासिए हो माय।

गाय की इतनी महिमा के बाद गाय का जीवन लोकगीत की इस पंक्ति में साकार हो गया है। विदा के समय बेटी अपने बाबुल से कहती है-

हम तो रे बाबुल तोरे खूँटा की, गइयाँ, जित हाँकौ हँकि जाँय।

भाषा पर गोकुल संस्कृति का प्रभाव :

गोकुल-संस्कृति में समय की संज्ञा भी गाय की दैनिक चर्या के आधार पर होती है। गौधूलि का समय इतना शुभ और शकुनयुक्त है कि विवाह की लग्न प्रायः गोधूलि के समय की होती है। गोकुल संस्कृति के प्रभाव

से ही भाषा में दुहैया, दोहनी, दुहामनी, लहड़े, चंवर, दूधाधारी, रंभाना, डकराना, गोखुर, गोमुख, जैसे शब्द बनते हैं और इस प्रकार के मुहावरों और कहावतों का प्रचलन होता है- गऊ कौ जायौ, गऊ होना, चौमासे को गोबर, दूध, पूत, सींग दिखाना, भली भयी मेरी मटकी फूटी, दधि बेचन सों छूटी, गोरस बेचत हरि मिलै एक पंथ द्वै काज, गीदी गाय गिलोंदे खाय, गोबर क्यों कियौ कि गऊ के जाये हैं, हरियाई के संग में कपिलाई को नास, दुधारू गाय की लात सही जाएं, चालनी में दूध दुहै करमन कूँ दोस दे। लक्षण के आधार पर गायों के विभिन्न नाम गोकुल में प्रचलित होते हैं कारी, कजरी, करोंदी, कबरी, कपिला, गोरी, जगी, टीकुली, धौरी, धूमरि, फुलही, वगुरेंदी, स्यामा, पियरी, राती। इत्यादि।

गोकुल की सौंदर्य चेतना :

दूध दुहने और दही बिलोने की मधुर ध्वनि के साथ गोकुल का सबेरा होता है, तो बड़ी-बूढ़ी गाती हैं,

गईया जागे बछरा जागे जागे रे दूधन के पिबइया।

खूँटन सों बछरा छुटे गैयन रहे हैं चुखाय, प्रभु के वचन सुनि कूकरा।

गोकुल की सांझ का चित्र होता है साँझुलिया होइ रम्यानी गैया बच्छा जो मिलें। बाखर में दूध दुहने के समय गोकुल के इन रमणीय दृश्यों को देखकर कौन मुग्ध न हो जायेगा आमें सामें बैठे दोऊ दोहत करत ठठोर। दूध धार धरनी गिरत। दृग भये चंद चकोर। गोकुल में विवाह हो और गायों के गीत न हो? गाय तो गोकुल की सौंदर्य चेतना है। जो तू सुरही अत बड़ी धुइयैगी, जसरत दरबार व्याहुलरौ कहिए। ए दुहि दीजो कोसल्या के हात, व्याहुलरौ कहिए।

के तैनें प्यासी गउअ बिड़ारी?

गोहत्या सबसे बड़ा अपराध है। इतना ही नहीं गायों को बिड़ारना भी पाप है। जन्म के गीतों में स्त्रियाँ गीत गाती हैं। प्रसव की पीड़ा अधिक क्यों होती हैं, कै तैने प्यासी गउअ बिड़ारी, कै मारे भनिज के मान।

छीकें पे दधि धरौ।

गोकुल के भोजन व्यंजनों में दधि, दूध, मक्खन और मलाई से अधिक सुन्दर और क्या होगा? प्रात:काल ही मैया कहती है छींके पै दधि धरौ है ऊखल चढ़ि उतार लेउ। सुरई का घृत तो देवताओं को भी प्रिय है, सुरै गऊ के घिरत अरे, भवन में दिवला जोरि धरे।

चरों नित नन्द की धेनु मझारन गोकुल संस्कृति में जीवन की सार्थकता गायों की सेवा ही मानी गयी है। इस देह की मांटी हो और उस पर दूब उगे तथा गाय उस दूब को चुगे- जा नर देही पे दूब जमेगी सो रुगि चुगि जाँइगी हरि की गइयां।

छीतस्वामी अहीर की जात में पुनर्जन्म की इच्छा करते हैं और रसखान गोकुल के ग्वारिया बनना चाहते हैं और ऐसी गाय बनना चाहते हैं- चरों नित नन्द की धेनु मझारन।

★ ★ ★

चन्द्र प्रताप सिकरवार

ब्रज रज उत्सव 2022

01 से 11 नवम्बर 2022

संस्कृति, कला, शिल्प एवं व्यंजन का अद्भुत समागम

वर्ष 2022 का ब्रज रज उत्सव उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद, जिला प्रशासन और पर्यटन विभाग ने संयुक्त रूप से धौलीप्याऊ स्थित रेलवे मैदान पर 01 से 11 नवंबर तक आयोजित किया। उत्सव में देश के जाने माने और चर्चित कलाकारों ने प्रतिभाग किया। पिछले वर्ष वृंदावन में हुए ब्रजरज उत्सव व हुनर हाट की तरह ही ब्रज की विविध लोक कला और विधाओं की झलक देखने को मिली।

ब्रजरज उत्सव में सांस्कृतिक प्रस्तुतियां हर रोज शाम 7 बजे से रात साढे 10 बजे तक हुईं। 01 नवम्बर को हिमाचल प्रदेश के विलासपुर निवासी शिव भक्त प्रसिद्ध गायक हंसराज रघुवंशी ने शिव भजनों की प्रस्तुति दी। 02 नवम्बर को माधवास रॉक बैण्ड के प्रसिद्ध भजन गायक माधवास द्वारा भजनों को पॉप स्टाइल में गाकर प्रशंसकों का उत्साह बढ़ाया। 03 नवम्बर को इंडियन रॉक बैंड इंडियन ओशियन द्वारा अपनी हंगामेदार प्रस्तुति

परिषद द्वारा कलाकारों का सम्मान

दी गयी। 04 नवम्बर को ब्रज के लाल लिटिल चेंप रहे हेमन्त ब्रजवासी ने तथा 05 नवम्बर को केके सूफी व अतुल पाण्डेय द्वारा संयुक्त रूप से सूफी गायन प्रस्तुत किया गया। 06 नवम्बर को हर-हर शम्भू की गायिका अभिलिप्सा पांडा द्वारा भजन गायन किया गया। 07 नवम्बर को भजन गायक कन्हैया मित्तल द्वारा खाटू श्याम के भजन गायन किए गए। 08 नवम्बर को गायक कलाकार कैलाश व पीयूषा के भजन गायन तथा सुप्रसिद्ध कत्थक नृत्यांगना गीतांजली शर्मा ने नृत्य प्रस्तुत कर सभी को मुग्ध किया। 09 नवम्बर को कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें सुप्रसिद्ध कवियों ने काव्य पाठ कर श्रोताओं को तालियां बजाने को मजबूर किया। 10 नवम्बर को गायिका मैथिली ठाकुर और 11 नवम्बर को सुप्रसिद्ध गजल गायक ओसमान मीर द्वारा प्रस्तुति दी गयी।

रेलवे ग्राउंड के भव्य मंच पर ब्रज के अन्य कलाकारों ने बांसुरी वादन, स्वांग भगत, लोकनृत्य, ब्रज की होली, रसिया दंगल, समाज गायन, गूजरी नृत्य, रांझा, कत्थक नृत्य, लावनी, लोकगीत, मटका नृत्य, चरकुला, नौटंकी, आभेर नृत्य आदि की प्रस्तुतियां दीं। इसके साथ ही वाद्य यंत्र अलगोजा, मशक, चमेली, इकतारा, डमरू, सारंगी, बीन, आदि की प्रस्तुति देखने को मिली।

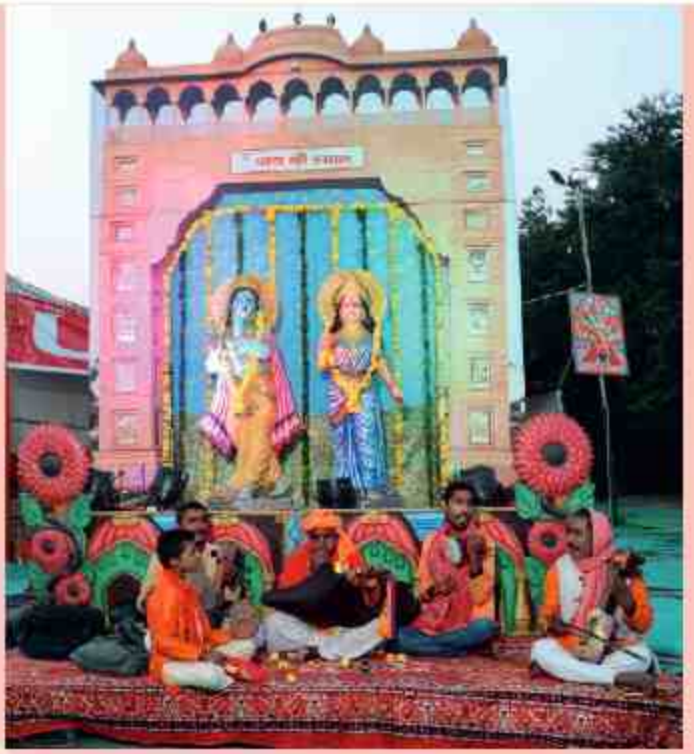

सारंगी, मधुरिया बैन, डमरू की प्रस्तुति

बहुरूपियों का प्रदर्शन

ढोल और तासे बजाते

ब्रज रज उत्सव 2022

बम्ब के रसिया गाते

इनमें नृत्य व गायन की कई ऐसी विधाएं हैं जो प्राय: विलुप्त हो रही हैं लेकिन इन विधाओं के कलाकारों को ब्रज के गांवों में से बुलाकर मंच प्रदान किया गया। इस बीच कवि सम्मेलन का भी आयोजन भी किया गया, जिसके प्रायोजक उमा मोटर्स थे। मनोरंजन के लिए झूले लगाए गए। फूड कोर्ट भी लगा। ये सभी ब्रजरज उत्सव 2022 के मुख्य आकर्षण रहे।

शिल्पकारों का आकर्षण

मेले में शिल्प कला भी देखने को मिली। हाथ से बने विभिन्न प्रकार के वस्त्रों व अन्य घरेलू सामान की खूब बिक्री भी हुई। हस्तशिल्प की कई दुकानें उत्सव में लगीं। लोगों का रुझान हस्तशिल्प के सामानों की खरीददारी में दिखाई दिया। बच्चों समेत समूचे परिवार के लोगों के लिए मनोरंजन हेतु झूले लगाए गए। फूड कोर्ट में तरह-तरह के व्यंजन लोगों ने पंसद किए। उत्सव में भाग लेने वालों में बहुत बड़ी संख्या महिलाओं व बच्चों की रही। चाट पकौड़ी के शौकीन लोगों की भीड़ खानपान के स्टॉलों पर जुटी रही।

भजनों से शिवमय हुई कृष्ण की नगरी

गोपाष्टमी से प्रारंभ हुए ब्रज रज उत्सव की पहली प्रस्तुति ने कृष्ण की नगरी को शिवमय बना दिया। पहले दिन रात आठ बजे से विलासपुर (हिमाचल प्रदेश) के शिवभक्त गायक हंसराज रघुवंशी ने अपने प्रसिद्ध "शिव शिव शंकरा, शिव समा रहे, ऐसा डमरू बजाया भोलेनाथ ने सारा कैलाश पर्वत मगन हो गया" गीत प्रस्तुत कर कृष्ण की नगरी को शिवमय बना दिया। शिव भक्तों की बार-बार मांग से भजनों का यह दौर रात 11 बजे तक जारी रहा।

भजन की प्रस्तुति देते हंसराज रघुवंशी

बांसुरी वादन करते सम्यक पाराशर

श्रीकृष्ण की नगरी मानो शिवमय हो गई। भजन गायक की आवाज का जादू इस कदर सिर चढ़कर बोला कि उपस्थित जन समूह शिव-शिव के गीतों पर झूम उठा। "मेरा भोला है भंडारी, करे नंदी की सवारी और गंगा किनारे" भजन गाए तो पंडाल में लोग हाथ उठाकर नाच उठे।

इससे पूर्व मंच पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों में पीलीभीत से आए बाल कलाकार सम्यक पाराशर का बांसुरी वादन, स्वामी हरिदास संगीत व नृत्य अकादमी वृंदावन और चंद्रकला डांस अकादमी दिल्ली की ओर से नृत्य प्रस्तुतियां दी गयीं, जिन्होंने लोगों का मनमोह लिया।

सपेरा, चग वादन, मसक प्राचीन वाद्य संगीत पसंद किए

ब्रज रज उत्सव में स्थानीय लोक कलाकारों ने भी प्रस्तुतियां दीं इसमें बीन की प्रस्तुति ग्राम बसई शेरगढ़ के मानिकचंद सपेरा के ग्रुप ने दी। हरप्रसाद राजपूत ने चग वादन प्रस्तुत किया। इसके अलावा मसक पर भी कलाकारों ने प्रस्तुति दी। महिपाल सिंह कामर वालों ने नगाड़ा बजाया। उज्जैन के श्री भस्म रमैया भक्त दल ने भी मेले के प्रांगण में अपने संकीर्तन की प्रस्तुति दी।

प्रस्तुति देतीं अभिलिप्सा पांडा

अभिलिप्सा पांडा के हर-हर शंभू पर झूमे दर्शक

राधे-राधे और जय कन्हैयालाल की जयकार के साथ ब्रज रज उत्सव में अभिलिप्सा पांडा ने 6 नवम्बर की शाम अपनी ऐसी प्रस्तुति दी कि उससे समा बंध गया। उन्होंने प्रभु श्रीकृष्ण के साथ भगवान शिव के भजनों की ऐसी जुगलबंदी बनाई कि लोग झूम उठे। शुरूआत हर-हर शंभू से की...। दर्शकों की मांग पर अभिलिप्सा पांडा ने इस प्रस्तुति को तीन बार दोहराया।

एक के बाद एक शिव की प्रस्तुति पर उन्होंने ऐसा समा बांधा कि लोग पांडा के स्वर के साथ स्वर मिलाने लगे। सांसद हेमा मालिनी ने भी मंच पर पहुंच कर अभिलिप्सा को पुष्प भेंट किए। विधायक पूरन प्रकाश ने स्वागत किया। अभिलिप्सा ने कहा कि बांकेबिहारीजी की इच्छा से यह संभव हो पाया है कि मैं मथुरा में आ सकी।

हेमंत ब्रजवासी और गीतांजलि सहित स्थानीय कलाकार भी छाए

मथुरा के गायक हेमंत बृजवासी ने भी खूब धमाल मचाया। इस कलाकार ने दादा साहब फाल्के इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में मिले अपने पुरस्कार को संगीत के रूप में बृज के लोगों को समर्पित किया।

उत्सव के आठवें दिन सुप्रसिद्ध कत्थक नृत्यांगना गीतांजलि शर्मा की प्रस्तुति ने सभी का मन मोह लिया। बल्लभाचार्य जी की कालजई रचना मधुराष्टकम की प्रस्तुति में मनभावन दृश्यों एवं कृष्ण की विभिन्न लीलाओं का उसने मंचन किया। कृष्ण जन्म, कालिया मर्दन, माखन चोरी, द्रौपदी चीर हरण, गिरिराज पर्वत लीला, मनिहारी लीला, महारास, इत्यादि कत्थक विधा की प्रस्तुतियां रहीं। मयूर रास, बृज की

प्रस्तुति देते हेमंत ब्रजवासी

पारंपरिक होली और अन्य कई प्रस्तुतियों से गीतांजलि ने दर्शकों को भावुक कर दिया। गीतांजलि शर्मा के ग्रुप में उनके साथ गार्गी वशिष्ठ, तेजस्विनी सिंह, वीनस शर्मा, नेहा त्रिपाठी, तनवी शर्मा, ओजस्विनी शर्मा, मुस्कान शर्मा, रश्मि शर्मा, दीपक अग्रवाल, लोकेश, सूरज, संदीप, मोहित शर्मा, माधव आचार्य व कुणाल दीक्षित आदि मौजूद रहे।

सीमा मोरवाल की प्रस्तुति

होली गीत प्रसिद्ध लोक कलाकार सीमा मोरवाल और ग्रुप ने प्रस्तुत किए। वृंदावन की कान्हा एकेडमी के कलाकारों ने भी लोक संगीत और लोक नृत्य प्रस्तुत किया। एक प्रस्तुति मुकेश कौशिक और मयूर कौशिक ने दी। इन्होंने अपनी शास्त्रीय संगीत की रचना धमार आदि प्रस्तुत की। हरदोई से आए शुक्ला बंधुओं ने गिटार की जुगलबंदी के साथ अपनी प्रस्तुति दी।

ब्रज रज उत्सव के दूसरे दिन की शाम पहुंचे पद्मश्री मोहन स्वरूप भाटिया ने कार्यक्रम पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि ब्रज तीर्थ विकास परिषद ब्रज के पुराने संगीत को सहेज रहा है, उसका संरक्षण कर रहा है। ब्रज के ये गीत हमारी थाती हैं। ब्रज तीर्थ विकास परिषद इन गीतों की रिकॉर्डिंग करा रहा है, यह आने वाली पीढ़ी के लिए काम आएगी। यहां पुराने वाद्य यंत्रों पर गीत संगीत बहुत अच्छे तरीके से संरक्षित किया जा रहा है। पद्मश्री मोहन स्वरूप भाटिया के समक्ष मैदान में प्रस्तुतियां दे रहे लोक कलाकारों ने मंच पर आकर बीन और अलगोजा आदि की प्रस्तुतियां दीं।

पद्मश्री मोहन स्वरूप जी भाटिया को स्मृति चिह्न भेंट करते उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद के मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री नगेन्द्र प्रताप जी

महारास की प्रस्तुति देती हेमा मालिनी जी

हेमा मालिनी की परिकल्पना में महारास : 09 नवम्बर ब्रजरज उत्सव के अंतर्गत विख्यात अभिनेत्री हेमा मालिनी और साथी कलाकारों द्वारा मथुरा के जवाहर बाग में कार्तिक पूर्णिमा की चांदनी रात में भव्य महारास की प्रस्तुति दी गई।

प्रस्तुति के दौरान राधा रास बिहारी नृत्य नाटिका के रस में सभी डूबते नजर आए। महारास की थीम का संगीत निर्देशन स्व. रविंद्र जैन का था। लता पताओं से सजे मंच पर कई बार कान्हा और राधा की ठिठोली के गीत गूंजे। महारास के दौरान वंशी की धुन और पायल की झंकार से जवाहर बाग झंकृत हो उठा।

मथुरा स्थित जवाहर बाग में भक्ति और प्रेमरस बरसा। इस बाग के पेड़, पत्तियां मानो उस प्रेम रस के साक्षी बन गए थे। द्वापरकालीन राधा-कृष्ण की अद्भुत लीला को जीवंत होता देख दर्शक और हेमा जी के तमाम प्रशंसक मंत्रमुग्ध हो गए। ऐसा लग रहा था मानो सोलह शृंगार किए राधा अपने प्रिय रास बिहारी के साथ गोपियों के संग सचमुच ही रास कर रही हो। कान्हा बने कलाकार और गोपी का रूप धारण करने वाली कई महिला कलाकार की रूप सज्जा से भी द्वापर के महारास जैसे दृश्य दिखे। महारास में कलाकारों की अपनी कला, भक्ति, प्रेम की प्रस्तुति ने लोगों के मन मस्तिष्क पर स्मृतियां संजो दीं।

नृत्यांगना हेमा मालिनी ने यद्यपि मथुरा में सांसद बनने के बाद कई बार नृत्य किया लेकिन गोपियों के संग स्वयं राधा बन कर महारास की प्रस्तुति पहली बार दी। भले ही मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ महारास के साक्षी नहीं बन सके लेकिन उन्होंने मथुरा से उड़ान भरने से पहले सांसद हेमा मालिनी को शुभकामनाएं दीं।

ब्रजरज उत्सव 2022 के अन्तर्गत जहां मुख्य मेला धौलीप्याऊ स्थित रेलवे ग्राउण्ड पर लगाया गया।

वहीं उत्सव का एक अन्य आयोजन वृन्दावन स्थित गीता शोध संस्थान परिसर के मुक्ताकाशीय रंगमंच पर हरिश्चंद्र तारावती नौटंकी का भव्य मंचन होतीलाल पांडेय के निर्देशन में हुआ। इसके प्रायोजक एन.के. ग्रुप एवं वृन्दावनपुरम् के श्रीकपिल देव उपाध्याय थे।

गीता शोध संस्थान में प्रस्तुति देते कलाकार

बाल प्रतियोगिता : राजकीय संग्रहालय द्वारा ब्रज रज उत्सव में जिन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया, उनमें चित्रकला एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता आदि प्रमुख थीं। मथुरा के विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने इसमें प्रतिभाग किया।

संग्रहालय के निदेशक डॉ. यशवंत सिंह राठौर की देखरेख में दो नवंबर को चित्रकला, तीन नवंबर को रंगोली, चार नवंबर को कहानी लेखन, पांच नवंबर को स्लोगन लेखन, छह नवंबर को पोस्टर, सात नवंबर को निबंध, आठ नवंबर को अपशिष्ट सामग्री शिल्प प्रतियोगिता, नौ नवंबर को सेल्फी एवं 10 नवंबर को मॉडल क्रिएशन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

प्रतिभाग करती छात्राएं

कवि अशोक अज्ञ

ब्रज प्रेम

(सवैया)

ब्रज प्रेम भक्ति कौ लड्डुआ है,
चखियो पर चूरौ मति करियो।
हर लता पता वन बेल वृक्ष,
इनकौ तू धूरौ मति करियो।
जे कंकरीट कौ महल बनै,
यह सपनौ पूरौ मति करियो।
जब आयौ द्वार बिहारी के,
विसवास अधूरौ मति करियो।

(घनाक्षरी)

छोड़ घर द्वार धन दौलत में लातमार,
हार मान बैठे ह्याँ उनकौ सहारौ है।
मान सनमान कहूं कहूं अपमान मिलै,
सबकौ भलौ हो ऐसौ मन में विचारौ है।
काऊ दिन भोजन में मालपुआ खीर मिलै,
काऊ दिन भूखे पेट फाके में गुजारौ है।
सबकूं बचावै वही संकट में आय जानै,
राधा रट राधा रट नाम कूं पुकारौ है।

ब्रज

कपिल देव उपाध्याय

वन्दे ब्रज वसुन्धराम्

ब्रजे विराजमानोऽमं काञ्चि दर्हामि नावृतिम्। इति चिक्षेप भगवान् उपरिस्थमनः स्फुटम्॥

(वैष्णवतोषिणी जीव गोस्वामी)

ब्रज में विराजमान मैं किसी को किसी भी प्रकार की पुनरावृत्ति (संसार) के योग्य नहीं बनाता हूँ (अर्थात् किसी का यहाँ पुनरावर्तन नहीं होता) यह विचार कर भगवान ने ऊपर स्थित शकट को स्पष्टतः फेंक दिया।

ब्रज शब्द का उपयोग ऋगवेद में अधिकता से प्राप्य है, ब्रज का अर्थ गायों के चारागाह या चारागाह के समूह के लिए उपयोग हुआ है। मानव के विकास क्रम में गाय मुद्रा की तरह उपयोग में लायी जाती थी। वस्तु या उपयोग की सामग्री का विनियम गायों के द्वारा ही होता था। अतः प्रत्येक संघ, गण जनपद ग्राम के लिए गायों के रखने के लिए उपयुक्त चारागाह या चारागाहों के समूह का होना भी अनिवार्य था, प्राचीन काल में गायों की समूहों की संख्या ही सम्पन्नता व आदर की प्रतीक थी, पुराणों में ब्रज शब्द का उपयोग गोकुल व वृन्दावन के लिए हुआ है। गाय व चारागाहों की सुरक्षा या स्वामी गोप होते थे। गोपों से ग्राम, ग्राम से जनपद निर्मित हुए। जनपद के लिए ब्रज शब्द का उपयोग उत्तरोत्तर गुप्तकाल के पश्चात् ही प्रचुरता से उपयोग हुआ है, इससे पूर्व नहीं। ब्रज जनपद के लिए पूर्व में प्रयुक्त मधु प्रदेश मधुपुरी मधुरा, मैथोरा, शौरसेन या शूरसेन प्रदेश है। वर्तमान में ब्रज शब्द का अर्थ साधारण तथा मथुरा जनपद व उसके समीप का भू भाग ही समझा जाता है एवं निम्न उक्ति प्रसिद्ध है-

ब्रज चौरासी कोस में चार गाँव निज धाम। वृन्दावन और मधुपुरी, बरसाना, नन्द गाँव॥

ब्रज चौरासी कोस के अन्तर्गत का भू भाग ही वर्तमान में ब्रज प्रचलित है, जहाँ प्रमुखता के साथ श्रीकृष्ण की बाल लीला सम्पन्न हुई है। बोल चाल की भाषा में ब्रज मण्डल प्रयुक्त होने लगा। मण्डल का अर्थ वृत्ताकार (गोलाकार) से था, परन्तु चौरासी कोस या मथुरा जनपद की सीमाएं कभी भी वृत्ताकार नहीं। नारायण भट्ट जी ने ब्रज यात्रा का प्रारंभ पन्द्रहवीं शताब्दी में किया परन्तु इससे पूर्व माधवेन्द्रपुरी, चैतन्य महाप्रभु, बल्लभाचार्य जी भी ब्रज यात्रा कर चुके थे। महाप्रभु बल्लभाचार्य जी ने जगह-जगह श्रीमद्भागवत का परायण किया एवं बैठक उनके अनुयायियों ने स्थापित की। नारायन भट्टजी ने 1560 ई० में ब्रज की सीमाओं का निरुपण इस श्लोक के आधार पर ब्रजविलास नामक ग्रन्थ में किया।

इत वर हद उत सोन हद, उत सूरसेन को गाँव।

ब्रज चौरासी कोस में, मथुरा मंडल धाम॥

पूर्व दिशा की सीमाएं अलीगढ़ जनपद का वरहद गाँव पश्चिम दिशा में उपहार बन गुड़ गाँव जनपद (हरियाणा) में सोन नदी के किनारे तक दक्षिण बटेश्वर (जन्हु वन) जिला आगरा, उत्तर में भुवनवन या भूषण वन शेरगढ़ परगना। एक अन्य श्लोक से ब्रज की सीमाएं इस प्रकार तय होती है।

पूर्व हास्य वनं पश्चिमोवहारिक।
दक्षिणे जन्हु संज्ञाकं भुवनाख्यं तथोत्तरे॥

जन्हु का प्रचलित नाम जिला आगरा बटेश्वर व भुवन का अर्थ भूषणवन से ही है। पूर्व में हास्य वन से अर्थ हाथरस है, पश्चिम में उपहार वन गुड़गाँव की सीमाओं से है।

पुराणों में मथुरा मण्डल का विस्तार बीस योजन बताया गया है एवं मथुरा मंडल को श्रीकृष्ण का स्थान इंगित किया है व यहाँ निवास करने वाले एवं तीर्थ परायण करने वालों के महापाप भी नष्ट हो जाते है। ऐसा विज्ञजन कहते हैं।

विंशत्तियों जनानां च माथुर मम मंडलं।
यत्र यत्र नर; स्नातो मुच्यते सर्वपातकैः॥

सूरदास जी ने भी अपने पद में भक्तिकाल में ब्रज को चौरासी कोस ही इंगित किया है।

"चौरासी कोस में निरंतर खेलत है बल मोहन"

वर्तमान में चौरासी कोस की वर्जनाओं को तोड़कर काफी बड़ा हो गया है, जिसमें मथुरा, हाथरस, अलीगढ़, एटा, आगरा, मैनपुरी, इटावा का कुछ भाग उ.प्र. जनपद, मुरैना, ग्वालियर, मध्यप्रदेश के जनपद, अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली आदि राजस्थान प्रदेश, होडल, हसनपुर, नूँह, गुड़गाँव, हरियाणा प्रदेश व उत्तर प्रदेश के अन्य जनपद गौतम बुद्ध नगर का भाग, बुलन्दशहर व गाजियाबाद को ब्रजभाषा संस्कृति के आधार पर सम्मिलित कर लिया है। प्राचीन काल में मथुरा मण्डल को मधुपुरी के नाम से जाना जाता था क्योंकि इसकी स्थापना मधु ने की, अत: इस कारण से इस का नाम मधुपुरी हुआ। पुराणों में मधु का काल विवादस्पद है, अनेक मधु का वर्णन प्राप्त होता है।

मधु कैटभ–सृष्टि के प्रारम्भ में मधु कैटभ की उत्पत्ति हुई, जिनसे विष्णु भगवान् स्वयं युद्ध से थककर विश्राम में चले गये। मधु कैटभ ने प्रसन्न होकर विष्णुजी से वरदान माँगने के लिए कहा, विष्णु हम दोनों भाई आप के बल से प्रसन्न है, आप इच्छानुसार वर माँगिये। भगवान विष्णु ने कहा– दैत्यों आप मुझे अपने मृत्यु का उपाय बतायें, मेरे द्वारा मृत्यु को प्राप्त हो।

दूसरा मधु चन्द्रवंशी राजा देवन का पुत्र हुआ इस का पुत्र पुरुवश हुआ, जो कि इक्ष्वाकु वंश के राजा रघु के पूर्ववर्ती दीर्घबाहु के समकालीन थे, इसकी पुत्री का नाम मधुमति था, जो कि सौराष्ट्र के राजा हर्यश्व पर आसक्त हो गयी उसने हर्यश्व के साथ विवाह कर अपने पिता के राज्य मधुपुरी में आश्रय प्रदान कराया, इनके पुत्र का नाम भीम था, मधुलवण संहार के उपरान्त यह भीम मधुपुर का शासक मधु का दोहित्र होने के कारण नियुक्त हुआ। अत: यह सूर्य वंशी होने के बावजूद भी चन्द्रवंशी कहलाया क्योंकि मधु को चन्द्रवंशी ही माना जाता है।

अन्य मधु चन्द्रवंश की इकसठवीं पीढ़ी में चन्द्रवंशी शासक हुआ, जिसका पुत्र लवण था। इसने बिखरे हुए यादवों को इक्ट्ठा या संगठित किया, यह मधु गुजरात से यमुना तट तक राज्य का स्वामी, सुशासक, वीर प्रतापी, धार्मिक, न्याय प्रिय शासक बतलाया गया है, इसके संदर्भ पुराणों व बाल्मीकि रामायण में विस्तृत प्राप्त होते है, जिसे शंकर भगवान ने अजेय त्रिशूल प्रदान किया था। इसका पुत्र लवण अत्याचारी था। ऋषियों के आग्रह पर भगवान् रामचन्द्र जी के छोटे भाई शत्रुघ्न ने लवण का संहार किया था।

बाल्मीकि रामायण में मधु को असुर लोला का पुत्र निरूपण किया है, जिसने मधुपुरी नगर की स्थापना की व नगर के बाहर का वन मधुवन कहलाया, यह नगर यमुना तट पर स्थित था। मधु की पत्नि कुम्भीनसी से लवण का जन्म हुआ। संहार शत्रुघ्न जी ने किया, इससे युद्ध करने के लिये प्रयाग से यमुना के किनारे मथुरा तक सेना के साथ शत्रुघ्न जी आये, भयंकर संग्राम के उपरान्त शत्रुघ्न जी को विजय प्राप्त हुई। शत्रुघ्न जी विजय उपरांत जब मधुपुरी में प्रवेश करने पर पुरी की सुन्दरता देखकर अभिभूत हो गये। सुन्दरता कल्पना से परे थी, ऐसा लगता था, इस पुरी का निर्माण देवताओं द्वारा किया गया है। शत्रुघ्न जी ने पुरी की मरम्मत करायी, परकोटा खाई को व्यवस्थित किया।

कुछ विद्वानों का मत है श्री शत्रुघ्न जी ने नवीन नगर का मथुरा के नाम से निर्माण कराया। प्राचीन इतिहास में लवण का शत्रुघ्न के साथ युद्ध का महत्व अत्याधिक है। ऐसा विद्वानों का मत है कि मधु व लवण अपने राज्य का विस्तार अपने जमाता हयश्र्व के सहयोग से गंगा तट या अवध सीमा तक कर श्रीभगवान राम को चुनौती देने लगा, जो कि अत्यन्त दुष्कर कार्य था, क्योंकि रावण के संहार के उपरान्त श्रीराम का प्रभुत्व संपूर्ण आर्यावर्त पर स्थापित हो गया था। इस परिस्थिति में रामजी को चुनौती कोई अत्यन्त बलवान प्रभुत्वशाली व्यक्ति ही दे सकता था। मधुपुरी की सम्पन्नता सौंदर्य अयोध्या से कई गुनी अधिक थी, मधु को विद्वान द्रविड़ संस्कृति का प्रतीक मानते है, विद्वानों का मत है शत्रुघ्न जी ने सुबाहु को मथुरा का शासक नियुक्त किया। कुछ विद्वानों का मत है कि शत्रुघ्न जी ने शूरसेन (लघु पुत्र) को मथुरा का शासक नियुक्त किया, यह भी सम्भव है कि सुबाहु को नियुक्त करने के कुछ समय बाद शूरसेन को नियुक्त किया होगा।

शत्रुघ्न जी के दिव्य लोक प्रस्थान के उपरान्त हर्यश्व व मधुमति के पुत्र भीम ने पुन: मथुरा पर अधिकार कर लिया।

भीम के पुत्र अन्धक व वृष्णि हुए, अन्धक वंश मथुरा का शासक हुआ। इसके पुत्र उग्रसेन व देवक थे। उग्रसेन का ही पुत्र प्रतापी अत्यन्त बलशाली प्रभावी कंस हुआ। इसने उग्रसेन पदच्युत कर राज सिंहासन पर आरूढ़ हो गया।

देवक के साथ कन्याऐं थी जिनका विवाह वृष्णि वंशीय वासुदेव जी से कर दिया, देवकी प्रमुख पत्नि वासुदेव जी की थी। देवकी व वासुदेव जी के पुत्र श्रीकृष्ण हुए वासुदेव; रोहणी से श्रीबलराम हुए। इन्हीं श्रीकृष्ण का शैशव काल में गौचारण, रास के लिए क्रीड़ा का आंगन ब्रज हो गया, क्योंकि नन्द, उपनन्द का वर्णन पुराणों में है, जिनका मुख्य व्यवसाय गौचारण व गौपालन, दुग्ध से उत्पन्न सामग्री की विक्री ही मुख्य कार्य था। नन्द के पास नौ लाख गायें थीं, वह जहाँ भी रहें, वह स्थान ब्रज कहलाया, गौ के निवास स्थान को गोष्ठ कहने लगे, ब्रज

गोष्ठों का समूह था क्योंकि नन्द आभीर संस्कृति के प्रतीक थे, महिलाएं या गोपियों का उनकी संस्कृति में विशिष्ठ सम्माननीय स्थान था।

ब्रज को तीन मुख्य भाग में बाँट सकते है– मधुवन, वृहदवन, वृन्दावन परन्तु ब्रज को मथुरा महात्म्य, ब्रजविलास, सुख सागर आदि भक्ति पूरक ग्रन्थों ने बारह वन (मुख्य) छत्तीस उपवन, छप्पन कुंड का वर्णन किया है व यमुना मुख्य नदी मुख्य है जो कि ब्रज में हरियाणा प्रदेश से प्रवेश कर ब्रज के दो भागों में विभक्त कर देती है, यह लहरिया दार बहती हुई महावन के आगे झंडीपुर गाँव में सँकरी हो जाती है, इससे आगे जमीन भी कम उपजाऊ है। यमुना में दो सहायक बरसाती नदी गहरी वर्षा ऋतु में जल से भरी होने के कारण सिंचाई में उपयोग में लाई जाती है, पथवाह नदी अलीगढ़ से निकल कर मांट के ऊपरी हिस्से से होती हुई यमुना में मिलती है। दूसरी करवन नदी सदाबाद के ऊपरी हिस्से से बहती हुई आगरा जनपद में यमुना में मिलती है।

ब्रज में यमुना के एक तरफ वर्तमान में मथुरा, वृन्दावन, छाता, शेरगढ़, कोसीकलां, नन्दगांव, कामां, बरसाना व गोवर्धन है। यमुना के दूसरी तरफ ब्रज में भाण्डीरवन, मांट, इष्टका, राया, सादाबाद, गोकुल, महावन, बल्देव प्रमुख है। ब्रज के राजस्थान व उत्तरप्रदेश के हिस्से अरावली पर्वत मालाऐं है। जिनमें से लाल बलुआ पत्थर, नीलापत्थर प्राप्त है जिसे निर्माण में प्रयोग लाया जाता है। इनमें अरावली पर्वत की विष्णु स्वरूप गिर्राज, ब्रह्मांचल (बरसाना), नन्दी पर्वत (नन्दगाँव) आदि केदार, आदि बद्री की पहाड़िया धार्मिक महत्त्व की है। व्हेनसाँग चीनी यात्री ने ब्रज इलाके में पीत स्वर्ण की खानों का वर्णन किया है जो कि वर्तमान में प्राप्त नहीं है। कई विदेशी यात्री मेगस्थनीज, ह्वेनसाँग फह्यान, टेपनीयर आदि विदेशी यात्रियों ने मथुरा ब्रज भ्रमण विभिन्नकाल में किया, यहाँ की परिस्थितियों, धार्मिक महत्व, संस्कृति का वर्णन किया। जैन धर्म की तीर्थकर नेमिनाथ जी की जन्म भूमि रहने के कारण जैन धर्म के केन्द्र की तरह अत्यधिक उन्नति की ओर अग्रसर हुआ। ब्रज–मथुरा में भगवान बौद्ध का भी धर्मप्रचार के लिए आगमन हुआ। यक्षी भद्रा को शिष्या बनाया व भिक्षा ग्रहण की। ब्रज राधा कृष्ण के त्यागपूर्ण निष्काम प्रेम के लिए प्रसिद्ध है वहीं सम्राट अशोक के गुरु बौद्ध उपगुप्त व वासव दत्ता की प्रेममयी जीवन यात्रा का वर्णन बौद्ध ग्रन्थ दिव्य दान में किया गया है।

ब्रज के नृत्य–चरकुला नित्यरास से उत्पन्न कत्थक, ग्रामीण लोक नृत्य आदि प्रमुख नृत्य, धमार, ध्रुपद, हवेली संगीत शास्त्रीय गायन, ब्रज के रसिया ख्याल लावणी, भगत, राँझा प्रमुख लोक गायन है, बाँसुरी पखावज, ढप, मृदंग, हारमोनियम, वीणा, तानपूरा, मंजीरा, अलगोजा आदि मुख्य वाद्य यन्त्र ब्रज संस्कृति के पोषक है। दीपदान, यमद्वितीया, जन्माष्टमी, होली, श्रावण के झूला, साँझी उत्सव विशेष पर्व है। छप्पन भोग, फूल बंगला, रासलोक नाट्य कला आदि ब्रज की प्रतिष्ठित परम्परा है मन्दिरों की स्थापत्य कला पर भक्ति आन्दोलन में सम्पूर्ण प्रान्तों से भक्तों का ब्रज में आकर वैष्णव साकार उपासना में संलग्न होने के कारण सभी प्रान्तों की स्थापत्य कला का प्रभाव देखने को मिलता है, परन्तु मन्दिरों के निर्माण विशिष्ट शैली कुँज निर्माण का उन्नयन ब्रज में हुआ। ब्रज में प्राकृत से प्राकृत शौरसेनी, शौरसेनी से मधुर भाषा ब्रजभाषा का विकास हुआ, जिसने सम्पूर्ण भक्ति आन्दोलन का नेतृत्व किया, अब भी जिस स्थान या क्षेत्र में ब्रज भाषा का उपयोग होता है, उसे ही ब्रज कहने लगे। जीवन आनन्द स्वरूप है, मानव का प्रत्येक कर्म परमानन्द हेतु है, अत: ब्रज संस्कृति में उत्सवों की भरमार है, ब्रजवासियों को आनन्द प्राप्त करने के निमित्त ही विभिन्न अवसरों की खोज रहती है।

सप्तसमुद्री कूप : मथुरा के इतिहास का साक्षी

लक्ष्मी नारायण तिवारी

पिछले दिनों मैं जब राजकीय संग्रहालय, मथुरा के परिसर में दोपहर के वक्त खड़ा गुनगुनी धूप सेंक रहा था, तब मेरा ध्यान इसी परिसर में स्थित सप्तसमुद्री कूप (कुआँ) की ओर गया। मैं बहुत देर तक इसे निहारता रहा, पर इसे देखकर मेरे मस्तिष्क में मथुरा के इतिहास की कई पर्तें खुलने लगीं। मथुरा का अतीत चलचित्र की भाँति उभर कर सामने आने लगा। मानो यह कूप मुझ से कह रहा हो– "मैं कोई साधारण कूप नहीं हूँ। मैंने इस महापुरी का चरम उत्थान और फिर पतन भी देखा है! मैं मथुरा के इतिहास का प्रत्यक्ष साक्षी हूँ।"

वास्तव में मथुरा का यह कूप एक सामान्य कुआँ भर नहीं है । इसके प्राचीन महत्व का उल्लेख भारतीय संस्कृति के महान आचार्य डॉ. वासुदेवशरण जी अग्रवाल ने भी किया है। सप्तसमुद्री कूप के नाम से प्रसिद्ध मथुरा का यह कुआँ लगभग दो हजार वर्षों से भी अधिक प्राचीन है। यह प्राचीन भारत के उस वैभवशाली मथुरा नगर की याद दिलाता है, जो एशिया का एक प्रमुख व्यापारिक केन्द्र हुआ करता था। जब मथुरा से विदेशी व्यापार का संचालन होता था और मथुरा से व्यापारी समुद्र पार यात्रा करने जाते थे। हम यह जानते हैं कि प्रथम सदी (कुषाण काल) में मथुरा देश का प्रमुख व्यापारिक महानगर था। उस समय व्यापारी सुदूर समुद्र पार की यात्राओं से बहुत सा धन कमाकर लौटते, तब सवा पाव से सवा मन सोने तक का दान करते थे। मत्स्य पुराण के षोडश महादान प्रकरण में सप्त समुद्र महादान की भी गिनती है। जिन कुओं के जल से ये दान संकल्प किये गये, वह सप्त समुद्री कूप

कहलाते थे। मथुरा के अलावा उस काल के प्रधान व्यापारी नगर काशी, प्रयाग, पाटलिपुत्र में भी ऐसे सप्त समुद्री कूप बचे हैं। लेकिन मध्यकाल तक आते आते मथुरा अपना व्यापारिक वैभव खो चुका था, वह यमुना नदी के किनारे-किनारे सिमटा हुआ छोटा सा नगर था, जिस का महत्व एक तीर्थ के रूप में रह गया था, किन्तु आश्चर्य यह है कि मध्यकाल तक मथुरा के सप्त समुद्री कूप का धार्मिक महत्व बना रहा। 'मथुरा महात्म्य' नामक ग्रंथ में इस कूप की महिमा का वर्णन प्राप्त होता है –

"अथात्र मुंचते प्राणान्मम लोकं स गच्छति।
अर्कस्थलसमीपे तु कूपं तु विमलोदकम्॥
सप्त सामुद्रिकं नाम देवा नामपिदुर्लभम्।
तत्र स्नानेन वसुधे स्वच्छंदेन अनालसः॥

(अर्क स्थल के समीप स्वच्छ जलयुक्त कूप है। यह सप्त समुद्रिक कूप के नाम से प्रख्यात् है, देवताओं के लिए दुर्लभ है। इस तीर्थ (कूप) में स्नान करने वाले इष्ट गति को प्राप्त होते हैं।) 18 वीं सदी में जब मथुरा का क्षेत्र आमेर-जयपुर के शासक महाराजा सवाई जयसिंह के अधिकार में आया तो, महाराजा ने मथुरा नगर का एक नक्शा (मानचित्र) तैयार कराया और दिलचस्प बात यह है कि मथुरा नगर के इस प्रथम नक्शे में भी सप्त समुद्री कूप को विशेष रूप से दर्शित किया गया है। अनेक ब्रज यात्रापरक ग्रंथों में भी मथुरा के इस कूप का उल्लेख प्रमुखता से प्राप्त होता है। ऐसे ब्रज यात्रापरक ग्रंथों की कई प्राचीन पाण्डुलिपि वृन्दावन के मन्दिर श्रीगोदा विहार में स्थित ब्रज संस्कृति शोध संस्थान के ग्रंथागार में देखी जा सकती हैं:-

ब्रिटिश काल तक यह कूप मथुरा नगर की सिंचाई के लिए प्रयुक्त होता रहा। इस का जल अत्यन्त मीठा था। हालाँकि यह कूप मध्यकालीन मथुरा नगर से थोड़ा दूर था, फिर भी लोक की स्मृति में बना रहा। माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मणों के परिवार में नव विवाहित दम्पति इस कूप की पूजा हेतु आते थे। जहाँ यह कूप है, वहाँ सन् 1917 ई. के लगभग मथुरा में उत्तर प्रदेश की पहली आधुनिक कॉलौनी डैम्पियर पार्क बनी, फिर यहाँ सन् 1930 ई. के लगभग संग्रहालय की इमारत निर्मित हुई जिस के परिसर में ही यह मथुरा का ऐतिहासिक सप्त समुद्री कूप है। इस कूप में से मथुरा कला की कई महत्वपूर्ण एवं दुर्लभ मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई हैं, जो राजकीय संग्रहालय, मथुरा में सुरक्षित हैं। परन्तु अब यह पूर्णत: सूख चुका है। संग्रहालय प्रशासन ने भी इसे बहुत पहले ढक कर बन्द कर दिया ।

आधुनिक मथुरा नगर भी अब इस कूप को पूरी तरह से भुला चुका है। अब यह कूप शान्त है और मेरे जैसे इतिहास प्रेमी को ही मथुरा के इतिहास की कहानियाँ सुनाता है।

★ ★ ★

सघन स्मृतियों से

पं. तोताराम शर्मा

पखावज वादक

डॉ. उमेश चंद्र शर्मा

ब्रज की रज में जनम-मरण अनेक जन्मों के पुण्य प्रतापों से ही है, यदि वह संगीत, साहित्य और अध्यात्म चिंतन की उन विभोर सरणियों में जीवन के क्षणों का लाभ लेता है तो यही उसका साधना और उपासना से उपलब्ध निजी अर्जन है; प्रस्तुत आलेख के आलोच्य नायक पं. तोताराम जी का शैशव इसी पावन रज में पहले अनजाने ही भावात्मक गहराइयों में उतरने लगा और फिर जानबूझ कर इस ब्रज रस के परिपाक में अवगाहन ही नहीं अपितु आकंठ समाधि मग्न रहने लगा, उठते बैठते, चलते फिरते, सोते जागते व व्यावहारिक जगत को साधते हुए भी उनका मनन स्थाई रूप से अपने आराध्य में केन्द्रित होकर ठहर गया जहाँ कबीर का यह पद चरितार्थ हो उठा-

सन् 2011 में केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी द्वारा पुरस्कृत पं. तोताराम शर्मा

रस गगन गुफा में अजर झरै।

आपका जन्म मथुरा जनपद के अन्तर्गत छाता तहसील के गांव धमसींगा में सन् 1947 को पं. लक्ष्मण प्रसाद जी व श्रीमती हरभेजी के आंगन में हुआ था। तोताराम जी की बाल्यावस्था जब किशोर वय से सन्धि करने को उत्सुक हो रही थी कि आपकी माताश्री की जीवन डोर बन्धनों से मुक्त हो गई; आप माता के स्पर्श से वंचित हो गये। एक प्रकार से पिता को ही माता का भी उत्तर दायित्व निभाना था। लक्ष्मण प्रसाद जी रासलीला के प्रखर मनीषी महापुरुष थे। आपने रासलीला मंडली का भी संगठन

बी.आर. अम्बेदकर विश्वविद्यालय, आगरा द्वारा पुरस्कृत पं. तोताराम शर्मा

सुचारु रूप से चलाया। उस समय हारमोनियम का रासलीला में प्रचलन कम था। रासलीलाओं में सारंगी का ही विशेष स्थान था। आप सारंगी वादन के सिद्ध हस्त कलाकार थे, स्वामी लक्ष्मण प्रसाद जी ध्रुपद गायकी व ताण्डव नृत्य के कला साधक थे। कहना अन्यथा न होगा कि उनका समर्पण इतना उत्कृष्ट था कि जब परिवारी बालक रूठा-मटकी करके रोने लगते थे तो आप उन्हें संभालने-समझाने के स्थान पर सारंगी बजाकर ऐसी सुन्दर शब्द संरचना निकालते थे कि बालक चुप होकर कुछ पलों में ही मुस्कराने लगते थे।

इस प्रकार के रंग-रंगीले वातावरण में पं. तोताराम जी की किशोरवस्था का विकास क्रम सारंगी और पखावज की मृदुल स्वर लहरियों की गमक आपके कोमल मानस में अनायास ही अपना आवास निर्मित करने लगी, इसी मध्य बालक की जिज्ञासा आकाक्षाँ के स्वप्न में तैरने लगी, पिताश्री की समीपता अब एक शिक्षक के रूप में अवतरित होकर प्रारम्भिक शिक्षा का सूत्रपात्र सहज रूप में मुखर होता हुआ पं. मुरलीधर जी के आशीष से विलसित हुआ।

पंडित जी जैसे-जैसे अपनी विधा की गहराई में उतरने लगे वैसे-वैसे ही पखावज की सूक्ष्म दृष्टियों पर ध्यान केन्द्रित होने लगा। किसी ने कहा है कि आवश्यकता आविष्कार की जननी है; साधना के क्रमिक सोपानों को एक के बाद एक को पीछे छोड़ने लगे तो नाथद्वारा मंदिर के दर्शनों का भाव जगा।

वल्लभ संप्रदाय के मंदिरों में गुम्बज का निर्माण नहीं किया गया। हवेली में ही ठाकुर जी को विराजमान किया गया। इस हवेली में जो शास्त्र सम्मत संगीत सेवा पल्लवित हुई; उस शैली को ही हवेली संगीत के नाम से जाना गया। वर्तमान में भी श्रीनाथ जी के मंदिर में इसी हवेली संगीत का नियमित अष्टयाम सेवा के साथ गायन होता है। इन गायनों में लीलाओं के पद पर्व उत्सवों पर समयानुसार गाये जाने पर ऋतु के आधार पर भिन्न-भिन्न रागों में निबद्ध होते हैं। सारंगी, पखावज और मजीरा इसके प्रमुख वाद्य उपकरण होते हैं। हवेली संगीत के मूलाधार अष्टछाप के कवि ही हैं, वही परम्परा आज तक विधिवत चल रही है।

नाथद्वारा के विशिष्ट पखावज वादक जिनको भारत सरकार ने पद्मश्री के सम्मान से विभूषित किया था। सुनाम धन्य पं. पुरुषोत्तम जी थे। आपकी ही सन्निधि में बैठकर पं. तोताराम जी ने पखावज वादन की गहनता को ग्रहण किया। इससे पिपासा और भी उत्तरोत्तर बढ़ने लगी तो वाराणसी के पं. मन्नू जी जिन्हें हम सभी मृंदगाचार्य के नाम से जानते है; आप से भी अति सूक्ष्म गुरों को हृदयस्थ किया तथा रामपुर के निवासी पं. अयोध्या प्रसाद जी के भी पावन सान्निध्य से पखावज के अनेक रहस्यों को जानने के सुअवसर से लाभान्वित हुए।

जिस प्रकार मधुमक्खी अति सुकोमल और सुवासित पुष्पों का रस ग्रहण करती हुई मधु पात्र को पूरित करती है, उसी प्रकार हमारे आलोच्य नायक ने पखावज के उस परिपाक रस को समग्र चेतना के साथ हृदयाकाश में संजोया था, इसी लिये आपने जिन नूतन बन्दिशों की रचना की उनमें आपने अपना ललित रूप भी दिखाया। उदाहरण के लिये हम कह सकते हैं कि पुष्टिमार्गीय परम्परागत अष्टसखा वन्दना परन, नव विधि परन, यमुना परन, कालीदमन परन, वल्लभ वंशीय परन इत्यादि।

पखावज कला के मर्मज्ञ होने पर राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर व कत्थक केंद्र दिल्ली में पखाबज गुरु के पदों पर सुशोभित हुए। ब्रज की भक्ति आपके मन को आकर्षित करती रही। जब आप आकाशवाणी के उच्च श्रेणी के कलाकार घोषित हुए। आपके पखावज वादन से प्रभावित होकर आकाशवाणी मथुरा-वृन्दावन में आपको ससम्मान नियुक्ति कर सेवा का मञ्जुल अवसर प्रदान किया।

सन् 1994 में आपने अपने ही प्रशिक्षु शिष्य मंडली के साथ भूपाली राग में मृदंग समवेत गान की अद्भुत प्रस्तुति से उपस्थित जनों का मन मोह लिया। भारत में जब भी प्रतिष्ठित संगीत सम्मेलन होते तो पंडित जी से मंच की शोभा द्विगुणित हो जाती थी जिनमें कतिपय शास्त्रीय संगीत सम्मेलनों का नाम स्मरण करना मैं समीचीन समझता हूँ। भारत की राजधानी दिल्ली का सुप्रसिद्ध मंच वृन्दादीन जयंती, श्रीधाम वृन्दावन व मुम्बई का स्वामी हरिदास संगीत समारोह, ग्वालियर म.प्र. का संगीत समारोह, वृन्दावन व वाराणसी का ध्रुपद मेला। ध्रुपद सोसाइटी दिल्ली व जयपुर में अष्टछाप के स्तम्भ छीत स्वामी समारोह नाथद्वारा आदि।

आपने आकाशवाणी की विशिष्ट सभाओं में भी प्रतिभाग किया, जिनमें शनिवासरीय संगीत सभा, मंगल वासरीय संगीत सभा आदि में एकल पखावज वादन प्रस्तुत कर प्रतिष्ठा को प्राप्त हुए। भारत के लब्ध प्रतिष्ठित ध्रुपद गायकों के साथ पखावज की संगति देकर गौरवान्वित होने का सुअवसर संगीत सम्मेलनों में प्राप्त होता रहा, जिनमें प्रमुख रुप से उस्ताद अमीनुद्दीन डागर कोलकाता, डागर बन्धु दिल्ली, उस्ताद् असदअली खाँ दिल्ली,

डॉ. समुमित मुटाटकर दिल्ली, पं. रामचतुर मलिक, पं. अभय नारायण मलिक, पं. लक्ष्मण चौबे, चन्दन जी, पं. गोपाल कृष्ण आदि।

विरासत परम्परा से प्राप्त साहित्य साधना भी अनवरत सृजनात्मक रही जिनमें नन्दीश्वर शतक, उत्सव शुकविलास, शुक विलास, मृदंग शुक विलास आदि रचनायें कला जगत के प्रेमियों के कंठ का हार बनी हुई हैं। वंशानुगत रासबिहारी की रासलीलाओं की रचना भी आपके द्वारा नवीन परिवेश के साथ सम्पन्न हुई। यथा- काकमाल्य, बाजीगर मिलन, श्री हरिवंश लीला, श्रीनाथ प्राकट्य, अष्टयाम सेवा आदि लीलाओं की रचना कर अपनी अन्तर भावना की प्रबल भक्ति का परिचय दिया।

आपके उत्साह में कभी भी न्यूनता परिलक्षित नहीं होती थी, सन् 1993 में ब्रज संगीत परिषद् की वृन्दावन में स्थापना कर नि:शुल्क पखावज की शिक्षा प्रदान की। आपके घर को यदि पखावज पाठशाला कहें तो कोई अन्योक्ति नहीं होगी क्योंकि गुरु शिष्य परम्परा का निर्वहन कितने सजग रूप से किया है यह इस क्षेत्र में आपकी अनुपम देन कही जा सकती; क्योंकि आज आपके सिखाये हुये, शिष्य भारत ही नहीं प्रत्युत विदेशों में भी आपके नाम की सुकीर्ति का विस्तार कर रहें है, जिनके नाम यहाँ प्रस्तुत न करना अन्यथा दोष का भाजन बनना पड़ेगा। यहाँ प्रतिनिधि शिष्यों में परिगणित श्री मोहनश्याम शर्मा दिल्ली, श्री फतेह सिंह गंगानी दिल्ली, श्रीडालचन्द्र शर्मा दिल्ली, श्रीगिरिधारी लाल आगरा, राधेश्याम शर्मा दिल्ली, तेजपाल भारद्वाज वृन्दावन, श्री हरीमोहन शर्मा दिल्ली, श्री जेरी फील्ड अमेरिका, श्रीरावर्ट हालैण्ड, श्री ऐन्ड्रयू जर्मनी, श्रीगोपीनाथ हालैण्ड।

सन् 2005 में आपका चिन्तन शिक्षा जगत के लिये इतना मुखर होकर प्रगट हुआ कि आपने न्यू ऐरा पब्लिक स्कूल की स्थापना की जो नगर के बालकों को संगीत के अतिरिक्त आधुनिक शिक्षा भी प्रदान कर किशोरों के समग्र विकास के लिये सेवायें प्रदान कर रहा है।

आपकी श्रम साधना से प्रभावित समाज के प्रतिष्ठित कला प्रतिष्ठानों ने आपको समय-समय पर समादृत किया है। जिनमें सन् 1975 में सुर सिंगार संसद मुम्बई द्वारा तालमणि सम्मान से विभूषित किया तो ब्रज संगीत परिषद द्वारा ब्रज संगीत शिरोमणि पुरस्कार प्रदान कर अपने आपको धन्य किया। सन् 2011 में आपको भारत के राष्ट्रपति ने केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी से सम्मान से अंलकृत किया गया।

इस प्रकार संगीत के विविध अनुष्ठानों का निर्वहन करते हुये, नाथद्वारा परम्परा के जीवन्त साधक और ब्रज का यह लाल जीवन के अन्तिम क्षणों तक नाद ब्रह्म की उपासना में लीन रहते हुये, 19 नवम्बर सन् 2021 को नाद ब्रह्म में ही विलय हो गये। ऐसा लगा मानो सब कुछ ठहरा सा गया हो।

19 नवम्बर 2022 को आपके शिष्य वर्ग ने संगीतमय श्रद्धाजंलि से सभागार को उनकी पावन स्मृतियों से शत-शत नमन करते हुए समूचे वातावरण को स्निग्ध कर दिया।

★ ★ ★

मानव भूगोल
ब्रज संदर्भ

डी.के. शर्मा (पर्यटक अधिकारी, मथुरा)

मानव भूगोल, भूगोल की विशेष शाखा कहें तो कोई अन्योक्ति न होगी। इसके अन्तर्गत मानव और प्रकृति का सम्बन्ध समन्वयता के साथ तादात्म्य स्थापित होता है। यह स्वत: ही होता है। जिसमें मानव सुखद अनुभूतियों के साथ निवास करता है, इससे उसका स्वास्थ्य भी बहुत ही अनुकूल रहता है, साथ ही मानसिक स्थिति उसी वातावरण के अनुकूल बनी रहती है। मानव भूगोल पृथ्वी की सतहों और मानव समुदायों के बीच संबंधों का संश्लेषित अध्ययन है।

ब्रज की भूमि अति मनोरम व जमुना की अविरल धारा की भांति ही अति उदार मानसिकता यहाँ की इस प्रकृति की ही देन है, प्रकृति मानव के विचारों पर गहरा और व्याप्त प्रभाव डालती है। ब्रज की सुरम्य वन स्थली ने लोगों को प्राकृतिक वात्सल्य रस से परिपूरित अंचल में बैठने और उसमें घूमने का भरपूर अवसर प्रदान किया। ब्रज की भूमि उपजाऊ है। कम से कम जब से हलधर बलराम ने अपने हल से जमुना की धार को मोड़ दिया। तब से ही ब्रज में लक्ष्मी की पूर्ण कृपा बनी रही। यहाँ का किसान सुखी और सम्पन्न देखा जाता है। यही कारण है कि उसके द्वारा गाये गये लोकगीत, लोक नृत्यों को दर्शक जब देखता है तो मुग्ध हो जाता है। यहाँ दूधों नहाओं और पूतों फलों का आशीष सदैव फलित रहा। माखन मिश्री और दही दूध की नदियाँ प्रवाहित रही हैं। यहाँ के पशु हष्ट-पुष्ट और दुधारु होते हैं। अतएव यहाँ सदैव रस का उद्रेक बना रहता है।

ब्रज के इतिहास से यह स्पष्ट होता है कि ब्रजवासियों में सदैव मानव को उसकी भावनाओं और उसके व्यक्तित्व को आदर और सम्मान दिया। यही कारण था कि रसखान ने अपनी भावनाओं को यहाँ रखकर परिपक्व किया और लिखा कि यहाँ की लकुटी और कामरिया पर तीनों पुरों का राज्य न्यौछावर हो सकता है। भगवान श्रीकृष्ण ब्रज की इस भावना किंवा आत्मा के न केवल सर्वोत्तम प्रतीक थे, प्रत्युत वे इसके उत्कृष्ट प्रचारक भी थे। यहाँ का विशुद्ध मानवीय विशाल उदारवादी हृदय सबको समान समझने वाला, सबको अपना समझने वाला, इन सबको भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने जीवन में चरितार्थ किया। इसी से वे विश्व वंदनीय बन गये।

ब्रजभूमि और यहाँ के पर्यावरण का इतना अमिट प्रभाव है कि भारत भूमि के प्रथम भक्त ध्रुव यहाँ यमुना किनारे अवस्थित मधुवन में पधारे और यहाँ ही नारायण का अनुसन्धान किया और उन्हें प्राप्त किया; चाहे भक्ति का उत्कर्ष द्रविण में हुआ था। नारायण पूजा अथवा पंचरात्र का विधान ईसा की किसी शताब्दी में कहीं भी प्रारम्भ हुआ हो। जिस समय नारद ने ध्रुव को यह परामर्श दिया था कि मधुवन में जाकर तपस्या करें उस समय उन्होंने यह भी कहा था कि यह एक ऐसा पवित्र स्थान है। जहाँ पर बहुत से ऋषि तपस्या करते हैं।

सामाजिक भूगोल : इसके अन्तर्गत हम प्राचीन ब्रज की कतिपय सामाजिक घटना पर प्रकाश डालेंगे। राजा अम्बरीश ब्रज में तपस्या करते थे। वे भगवान् विष्णु के अनन्य भक्त थे। उन्हीं के नाम पर मथुरा में अम्बरीश टीला आज भी विख्यात है। एक दिन उन्होंने दुर्वासा ऋषि को भोजन पर निमन्त्रण दे दिया। परन्तु ऋषि को स्नान में देर होते देखकर और सूर्य के अस्त होने के भय के कारण उन्होंने परायण कर लिया, जिससे नाराज होकर दुर्वासा ऋषि ने उन्हें शाप दे दिया। उस समय भगवान् विष्णु के चक्र सुदर्शन ने ऋषि का पीछा कर उन्हें बाध्य किया कि वे राजा से क्षमा याचना करें। इस कथा का ब्रज के जीवन से बहुत गहरा संबंध है। यह घटना श्रीकृष्ण के जन्म से बहुत पहले घटित हुई थी। इसने यह सिद्ध कर दिया कि ब्रज में उस समय भी परिपाटी अथवा ऊपरी शिष्टाचार के अधिक मनोभावना को महत्व दिया जाता था। ब्रज का महत्व तभी है जहाँ भावना प्रधान है।

अम्बरीश के पश्चात् मथुरा के इतिहास में एक विशिष्ट व्यक्तित्व का दर्शन होता है उन्हें मधु नाम से जाना जाता है। इन्हीं के नाम से मधुरा हुआ और अब मथुरा नाम प्रसिद्ध है। ये भी यदुकुल भूषण थे। जब मधु को यह ज्ञात हुआ कि रावण ऋषियों, देवताओं और मनुष्यों की बहू-बेटियों को उठा कर ले जाता है। तो मधु ने अकेले ही मथुरा से जाकर लंका पर चढ़ाई की और रावण की बहन कुम्भीनसी को उठाकर ले आया। कुम्भकरण और मेघनाथ बैठे देखते रहे। कुछ कर नहीं सके। मधु का राज्य ब्रज क्षेत्र से लेकर द्वारिका में सौराष्ट्र तक फैला हुआ था। यदुवंशी अपनी प्रबल नौ सेना के लिये विख्यात थे। जब रावण ने यह समाचार सुना, तो बड़े क्रोध में आकर विशाल सेना सजाकर मथुरा आया। लेकिन जब मथुरा में उसने मधु का वैभव देखा तो उसका साहस लड़ने का नहीं हुआ उसने अत्यन्त कौशल से अपनी बहन को बुलाया और सौभाग्यवती होने का आशीर्वाद दिया। उसकी बहन ने जब अपने पति का पराक्रम बताया, तो रावण ने यह प्रयास किया कि मधु को अपना सहायक बनाकर देवताओं से लड़ा जाय, लेकिन मधु ने रावण का विशेष सत्कार तो किया किन्तु देवताओं के विरुद्ध लड़ाई में वह सम्मलित नहीं हुआ। क्योंकि इन्द्र उसके मित्र थे। मधु को शूल प्राप्त था। जो शत्रु को मार कर लौट आता था। सम्भवत: भारत में स्पात का बना प्रथम अस्त्र था।

उस समय की मथुरा का वाल्मीकि ने जो वर्णन किया है व शोभनीय है- यमुना के तीर पर शोभित अर्द्धचन्द्रकार रूप में सुशोभित मथुरा अपने जनपद के भोले निवासियों के कारण सभी को प्रभावित करती है। मथुरा के नगर और राजाओं की भारतीय साहित्यकारों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है। कालिदास ने रघुवंश में मथुरा के राजा के उज्ज्वल चरित्र और जल क्रीड़ाओं का उल्लेख किया है। महाकवि माघ ने भी ब्रजवासियों की उदारता, संगीत प्रेम और सौन्दर्य के वर्णन में किसी प्रकार की कमी नहीं है।

विशुद्ध दर्शन की दृष्टि से ब्रज ने प्रत्येक धर्म को अपना उदारवादी दृष्टिकोण प्रदान किया, जिस समय कर्मकाण्ड का बोल वाला था। भगवान् श्रीकृष्ण ने कर्म योग का सिद्धान्त प्रतिपादित किया जो आज भी उतना ही प्रासंगिक है। जितना कि महाभारत काल में।

उपनिषद में यह उल्लेख मिलता है कि देवकी पुत्र कृष्ण घोर आंगिरस के शिष्य है। तब यह प्रश्न उदय होता है कि ये अंगिरस कौन थे ? आंगिरस स्पष्टत: अंगिरा ऋषि या उनके वंशज ही हो सकते हैं। प्राचीन काल में एक नाम सैकड़ों वर्षों तक आता है। वशिष्ठ और व्यास अनेक राजाओं के काल में उपस्थित होते हैं।

इतिहासकारों ने उसका यही अर्थ समझा है कि ये नाम पारिवारिक नाम हैं, व्यक्ति सूचक नहीं है; और पिता पुत्र पौत्र प्रपौत्र उसी कुल नाम से ज्ञात होते रहे हैं। अगर इस परिपाटी को हम आंगिरस के ऊपर लागू करें, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि आंगिरस उन अंगिरा ऋषि की संतान हैं। जिनके मुख से सबसे पहले वेद प्रगट हुआ, वेदव्यास जी ने इन वेद का संपादन किया। उन्होंने ही इन्हें संहिता बद्ध किया है। वेदों के जब खंड संपादित कर दिये गये तो ज्ञान पक्ष वाला ऋग्वेद, कर्मकाण्ड वाला यजुर्वेद, संगीत वाला सामवेद कहलाया। जो शेष मंत्र बच गये जिनकी विषय क्रम से एक वेद के रूप में संपादन करना एक दुरुह कार्य था। इसका प्रमुख कारण यह था कि उनमें विषय विविध थे तथा ऋग्वेद के जो कुछ सर्वोत्तम मंत्र थे, उनको अथर्ववेद में रखा गया। और उसे पुराना वेद कहकर स्वीकार किया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि कुछ लोगों ने केवल तीन वेदों का अध्ययन करना पर्याप्त समझा तथा कुछ लोगों ने चार का ब्रज क्षेत्र में अंगिरा का महत्व था। यहाँ चारों वेदों का प्रणयन हुआ।

ब्रज की संस्कृति में वेद की चर्चा करने का तात्पर्य यह स्पष्ट करना है कि ब्रज की संस्कृति का मूल आधार क्या है? अथर्ववेद अत्यन्त व्यावहारिक और वैज्ञानिक मन्त्रों का संग्रह है। प्रत्येक व्यक्ति की भौतिक और आध्यात्मिक आवश्यकताओं का भी उसमें ध्यान रखा गया है और कभी कभी तो अथर्ववेद को पढ़ने से ऐसा लगता है कि जैसे वनस्पति शास्त्र, चिकित्सा शास्त्र अथवा जीव शास्त्र का अध्ययन करते हैं, हमारी दृष्टि में अथर्ववेद का आधार साधारण मनुष्य का स्वस्थ जीवन है, जो प्राचीन ऋषि अंगिरा की विशेष देन है। यह विचार धारा ब्रज में प्रस्फुटित हुई हो या नहीं परन्तु पल्लवित यहाँ ही हुई, जिसके परिणाम स्वरूप ब्रज के दृष्टिकोण में एक विशेषता आ गई।

★ ★ ★

मूर्तिशिल्प

डॉ. शिवानी कौशिक, आगरा

प्रमुख धार्मिक केन्द्र होने के कारण मथुरा एवं इस क्षेत्र के जनमानस में कलात्मक अभिरूचि आरम्भ से ही विद्यमान रही जो कि प्रथम शताब्दी ई० में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच चुकी थी। उत्खनन से प्राप्त भूरे चित्रित पात्र एवं मातृदेवियों की मृण्मूर्तियाँ पूर्व मौर्यकालीन मूर्तिशिल्प प्राचीन मूर्ति शिल्प परम्परा का प्रमाण प्रस्तुत करती है। मौर्यकाल से यहाँ प्रस्तर की मूर्तियाँ भी बनने लगी थीं। यहाँ की लोक कला का प्रयोग परखम यक्ष जैसी प्रतिमाओं में दिखायी देता है। ईरान-यूनान मिश्रित गांधार शैली का प्रभाव यहाँ के प्रारम्भिक कला पर दिखलायी पड़ता है। गांधार एवं भारतीय शैली का अद्‌भुत समन्वय मथुरा शैली में परिलक्षित होता है। शक, शुंग एवं कुषाण वंशी राजाओं के शासनकाल में मथुरा की मूर्तिकला को अधिक विकसित होने का अवसर प्राप्त हुआ। कालान्तर में मथुरा कला के नाम से प्रसिद्ध हुये उक्त शिल्प निर्माण में सांची तथा भरहुत की शैली का अनुकरण भी किया। मथुरा के आस पास पाषाण की उपलब्धता के कारण यह स्थान मूर्तिकला के निर्माण तथा उत्तर भारत के प्रमुख शहर जिनमें कौशाम्बी, सारनाथ प्रमुख हैं, कला का आपूर्ति केन्द्र भी बन गया था। गुप्तकाल में मूर्तिशिल्प में कुषाण काल जैसी सौष्ठव व निजता नहीं रही फिर भी मूर्तिकला का निर्माण कई शताब्दियों तक इस क्षेत्र में जारी रहा।

कुषाण कालीन बौद्ध प्रतिमा
राजकीय संग्रहालय, मथुरा

कुषाणकाल में ब्राह्मणमूर्तियाँ- ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सूर्य, इन्द्र, कार्तिकेय, अग्नि, बलराम, कामदेव, दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी, मातृदेवियाँ,

एकानांशा, दक्ष, नाग आदि के प्राचीन स्वरूप मिलते हैं। गुप्तकाल में इन मूर्तियों के साथ-साथ स्वतंत्र रूप में कृष्ण, गणेश, गंगा, यमुना, दण्ड, पिंगल एवं आदि भी बनने लगे थे। साथ ही देवताओं के साथ उनके आयुधों का मानव रूप में प्रदर्शन तथा देवताओं की लीलाओं का अंकन भी होने लगा था।

कंकाली टीला जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र रहा जहाँ तीर्थंकरों, जैन देवियों तथा आयागपट्ट आदि प्रतीकों के अंकन भारी मात्रा में मिले हैं। तीर्थकरों में आदिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर की पद्मासन, खड्सासन एवं सर्वतोभद्र प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं। जैन देवियों में अम्बिका, चक्रेश्वरी, सरस्वती, न्यगमेश और आर्यवती की मूर्तियाँ मिली हैं। आयागपट्ट प्राय: वर्गाकार शिलापट्ट होते हैं जिन पर तीर्थंकर, स्तूप, स्वास्तिक, नन्द्यावर्त आदि पूज्य चिन्ह उत्कीर्ण किये गये हैं। इसके अतिरिक्त शिलापट्ट, वेदिका स्तम्भ भी मिले हैं जिन पर जैन धर्म सम्बन्धी मूर्तियाँ एवं चिन्ह अंकित हैं। इन पर देवता, यक्ष-यक्षी, पुष्पित लता-वृक्ष, मीन, मकर, गज, सिंह, वृषभ, मंगलघट, कीर्तिमुख एवं श्रीवत्स आदि प्रतीक बड़े कलात्मक ढंग से उत्कीर्ण मिलते है।

बौद्ध प्रतीकों का पूजन कुषाणकाल से कई शताब्दी पहले आरम्भ हो चुका था। यज्ञों तथा स्तूपों के पास वेदिकायें एवं वेदिका-स्तम्भ बनाये जाते रहे हैं। इन स्तम्भों पर विविध मनोरंजक चित्रण मिलते हैं। यहाँ की कला में यक्ष, किन्नर, गंधर्व, सुपर्ण तथा अप्सराओं की अनेक मूर्तियाँ मिलती है। इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र में नाग, नागी की प्रतिमाएँ बड़ी संख्या में मिली हैं। इस क्षेत्र में लोकजीवन तथा देवी देवताओं से सम्बन्धित मिट्टी की मूर्तियाँ भी बड़ी संख्या में मिली हैं। अधिकांश सांचों की बनी मृण्मयी मूर्तियाँ स्लेटी रंग की हैं जो नागरिक एवं ग्रामीण लोक जीवन पर प्रकाश डालती हैं।

उक्त वर्णित पुरासम्पदा के अध्ययन से प्रतीत होता है कि मथुरा-वृन्दावन क्षेत्र प्राचीन काल से ही धार्मिक आस्था का महत्वपूर्ण स्थल रहा है। इसके गौरवमय अतीत को सुरक्षित रखना एवं आने वाली पीढ़ी को इस पुरासम्पदा को मूलरुप में सौंपना, प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। यह तभी सम्भव है जब जनमानस इस पुनीत कर्तव्य के निर्वहन में स्वयं की भागीदारी महसूस करे।

★ ★ ★

उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद के प्रगति पथः

आओ चलें !
रसखान उपवन

उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद द्वारा महावन की रसखान और ताजबीबी की समाधि को लगभग नौ करोड़ की लागत से संवारे जाने और इन्हे जीएलए विश्व विद्यालय को अनुरक्षण हेतु गोद दिए जाने के बाद यहां बहुत तेजी से पर्यटक बढ़े हैं। अब ये स्थली ब्रज की प्रमुख पर्यटन स्थली बन चुकी है। गोकुल, महावन, रमणरेती, ब्रह्मांड घाट और चिंताहरण महादेव वाले ज्यादातर तीर्थयात्री व पर्यटक रसखान समाधि पर पहुंच रहे हैं। यहां की सुंदरता को देख सभी लोग आश्चर्य में पड़ जाते हैं। बार-बार यहां आने की इच्छा करती है।

जीएलए ने रसखान समाधि गोद ली

परिषद के प्रयासों से मथुरा के जीएलए विश्वविद्यालय ने ब्रज की सांस्कृतिक धरोहरों के अनुरक्षण करने की जिम्मेदारी ली है। इन धरोहरों में महावन की रसखान समाधि और ताज बीबी समाधि है। इन दोनों की देखरेख का जिम्मा जब से जीएलए विवि ने लिया है, इन स्थानों पर तीर्थयात्री व पर्यटकों की आमद तेजी से बढ़ रही है। गोवर्धन परिक्रमा मार्ग स्थित कुसुम सरोवर भी इसी स्कीम के तहत जीएलए विवि ने अनुरक्षण हेतु लिया है। वैसे ब्रज के ये तीनों स्मारक स्थल पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अधीन हैं।

ब्रज में इनके अलावा ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विरासत समेटे अन्य तमाम स्मारक भी हैं जिनके उचित अनुरक्षण के लिए केंद्र सरकार की अपनी धरोहर-अपनी पहचान स्कीम काफी उपयोगी सिद्ध होगी।

जैसा कि सभी जानते हैं अपनी धरोहर-अपनी पहचान स्कीम में केंद्र सरकार पुरातत्व विभाग के अधीन अनेक ऐतिहासिक इमारत, किलों, महल और मंदिरों को निजी कंपनियों को पांच वर्ष के लिए अनुरक्षण हेतु सौंप रही है। इस स्कीम को ब्रज में लागू करने का काम उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद ने किया।

उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद ने महावन की इन दोनों समाधि स्थल को जिस तरह से चमकाया और सजाया है, उसे देख मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ही नहीं बल्कि आधा दर्जन विभागों के प्रमुख सचिव व अपर मुख्य सचिव गद्गद हो गए थे। यहां फूड कोर्ट, ओपन ऑडीटोरियम व चलचित्र केंद्र के अलावा रसखान व ताज बीबी की सुंदर प्रतिमाएं स्थापित की गयी हैं। मुख्यमंत्री जी विगत 07 जून 2022 को रसखान समाधि पर पहुंचे थे। योगी जी की अध्यक्षता में रसखान समाधि स्थित बड़े कक्ष में उप्र ब्रज तीर्थ विकास परिषद की बैठक हुई थी। बैठक में भाग लेने लगभग आधा दर्जन विभागों के प्रमुख सचिव और अपर मुख्य सचिव भी रसखान समाधि पर आए थे। ये सभी परिषद के पदेन सदस्य के रूप में बैठक में भाग लेने रसखान समाधि पर पधारे थे। योगी जी ने रसखान व ताजबीबी की समाधि को देखा और पुष्प अर्पित किए थे। मुख्यमंत्री जी ने रसखान पर बनी 18 मिनट की डाक्यूमेंट्री भी चलचित्र केंद्र में देखी थी। रसखान समाधि स्थल पर पहुंचे

मुख्यमंत्री जी को जीएलए विवि के कुलाधिपति नारायण दास अग्रवाल, चीफ फाइनेंस ऑफिसर विवेक अग्रवाल, प्रति कुलपति प्रो. अनूप कुमार गुप्ता, कुलसचिव अशोक कुमार सिंह ने बुके भेंटकर उनका स्वागत किया था।

रसखान समाधि को देखने के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी 7 जून 22 को पधारे थे जबकि राज्यपाल श्रीमती आंनदी बैन पटेल 22 फरवरी-22 में यहां आयी थीं।

विजिटर रजिस्टर में मुख्यमंत्री योगी जी ने लिखा कि- भक्ति जात-पात नहीं देखती। रसखान तथा ताज बीबी इसका उदाहरण है। इससे पूर्व राज्यपाल आनंदी वैन पटेल भी रसखान समाधि की सुदंरता देख आश्चर्य में पड़ गयी थीं। उन्होंने लिखा कि- यहां आकर बहुत सुखद अनुभव हो रहा है। यहां के स्मारकों का काफी अच्छे से अनुरक्षण किया गया है। ये अद्भुत स्थल है। कृष्ण भक्ति का बेजोड़ उदाहरण है। मैं यहां दोबारा आना पसंद करूंगी।

रसखान : वर्ष 1548 में काबुल में जन्मे सैयद इब्राहीम पर कृष्ण भक्ति ने ऐसा जादू किया कि गोस्वामी विट्ठलनाथ से दीक्षा लेकर वह कृष्ण भक्त रसखान बन गए। रस की खान होने से ही उनका नाम रसखान पड़ा।

वर्ष 1628 में उनकी मृत्यु हुई। रसखान की दो पुस्तकें सुजान रसखान और प्रेम वाटिका प्रसिद्ध हैं। उन्हें फारसी, हिंदी एवं संस्कृत का अच्छा ज्ञान था। रसखान समाधि और उसके आसपास का एरिया आज जिस भव्यता के साथ हमें नजर पड़ता है, वह सब उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद के प्रयासों से संभव हो सका है।

ताज बीबी : ताज बीबी के मकबरा के सौन्दर्यीकरण को देख मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने अपने पिछले दौरे में उप्र ब्रज तीर्थ विकास परिषद की पहल की मुक्त कंठ से सराहना की थी। ताज बीबी अकबर की मुस्लिम पत्नी थी, लेकिन भागवान श्रीकृष्ण में उसकी अगाध आस्था थी। इसी आस्था के कारण वह पहले वृंदावन में फिर गोकुल में रहने लगी। महावन के समीप रसखान समाधि से कुछ कदम दूरी पर उसी ताजबीबी की समाधि है जिसे उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद ने संवारा है।

ब्रज चौरासी कोस परिक्रमा मार्ग बनेगा मुख्य विरासत मार्ग

उप्र ब्रज तीर्थ विकास परिषद के प्रयासों से

ब्रज के लिए अब तक का सबसे बड़ा प्रोजेक्ट

उप्र ब्रज तीर्थ विकास परिषद के प्रस्ताव पर ब्रज चौरासी कोस परिक्रमा मार्ग मुख्य विरासत मार्ग बनेगा। सांसद हेमा मालिनी के प्रयास भी रंग ला रहे हैं। इसका निर्माण राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण करेगा। माना जा रहा है कि आजादी के बाद मथुरा के लिए यह सबसे बड़े प्रोजेक्ट में से एक है। परिक्रमा मार्ग का कुछ हिस्सा राजस्थान व हरियाणा राज्य में भी पड़ेगा।

उप्र ब्रज तीर्थ विकास परिषद ने इस चौरासी कोस परिक्रमा मार्ग प्रोजेक्ट के लिए लोगों से सुझाव भी लिए हैं। इस प्रोजक्ट को पास कराने में सांसद हेमा मालिनी के प्रयास भी रंग लाने लगे हैं। इसका प्रस्ताव उप्र ब्रज तीर्थ विकास परिषद ने भारत सरकार के परिवहन मंत्री नितिन गडकरी के पास जब भेजा था तब इसे स्वीकार कर लिया गया। इसमें राज्य सरकार के अलावा केंद्र सरकार द्वारा रुचि ली जा रही है।

361 किलोमीटर में फैला यह परिक्रमा मार्ग भगवान श्रीकृष्ण की जन्म और प्रमुख लीला स्थलियों से श्रद्धालुओं को जोडेंगा। इस दायरे में शामिल आठ प्रमुख तीर्थ स्थल, 13 वन, 24 पौराणिक उपवन, 20 ऐतिहासिक कुंडों का सांस्कृतिक परिदृष्य श्रद्धालुओं को देखने को मिलेगा।

परिक्रमा मार्ग को छह मीटर चौड़ाई में पक्का और 7.5 मीटर चौडाई में कच्चा तैयार किया जाएगा। कच्चे मार्ग पर पैदल यात्रियों के लिए घास लगाई जाएगी। इसके दोनों ओर वृक्ष होंगे, जिसमें कृष्णकालीन वृक्षों की अधिकता रहेगी।

रेलवे क्रॉसिंग पर एलिवेटिड क्रॉसिंग व साइनेज प्रणाली रहेगी। सुरक्षा के लिए बोलार्ड, रेट्रो रिफलेक्टिव के अलावा आश्रम, शौचालय, पीने के लिए पानी, स्टॉल सहित बुनियादी सुविधाएं का भी प्रावधान है। नेशनल हाईवे प्राधिकरण ने परिक्रमा को पक्का बनाने के लिए डीपीआर बनायी है। यह प्रोजेक्ट जब पूरा होगा तब ये ब्रज में पर्यटन की दिशा बदल देगा। स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के साधन और पर्यटकों की संख्या बढ़ेगी।

प्रस्तावित परिक्रमा मार्ग की विशेषताएं

★ परिक्रमा में 36 बड़े और 28 छोटे पड़ाव स्थल।

★ बड़े पड़ावों में 26 उप्र में, 07 राजस्थान में और 01 हरियाणा में।

★ पड़ाव स्थलों पर पार्किंग, टेंट, आवास, डाइनिंग हॉल, कथा स्थल।

★ एक पड़ाव स्थल पर 200 से 1000 यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था।

★ हर पड़ाव स्थल 1.25 से 06 एकड़ क्षेत्र में विकसित होगा।

★ ब्रज चौरासी कोस परिक्रमा मार्ग 361 किमी में पक्का बनेगा।

★ परिक्रमा में 08 प्रमुख तीर्थ स्थल, 13 वन, 24 उपवन, 20 कुंड पड़ेंगे।

★ परिक्रमा मार्ग 04 जगह यमुना से, 04 जगह एनएच से गुजरेगा।

★ परिक्रमा में 87 रजवाह, 02 नदी और 07 रेलवे क्रॉसिंग पड़ेंगी।

उप्र ब्रज तीर्थ विकास परिषद, सांसद हेमा मालिनी के प्रयास भी रंग ला रहे हैं।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी की पहल पर आने वाले समय में तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए कई नए पथ तैयार होंगे। मथुरा, वृंदावन, गोवर्धन व बरसाना समेत अन्य स्थानों के लिए नए मार्ग कनेक्ट होंगे। ब्रज चौरासी कोस परिक्रमा मार्ग पक्का होगा। इसके लिए पूर्व से ही उप्र ब्रज तीर्थ विकास परिषद प्रयासरत रहा। सांसद हेमा मालिनी के प्रयास भी सराहनीय हैं।

मथुरा-वृंदावन व ब्रज में चलायी जाने वाली विभिन्न पथ परियोजनाओं पर 24 जून 2022 को नई दिल्ली में उच्चस्तरीय विचार-विमर्श हुआ था। यह बैठक केंद्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी के आवास पर हुई थी। बैठक में रेल मंत्री, जहाजरानी एवं जल मार्ग मंत्री, केंद्रीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री उपस्थित रहे। बैठक में मथुरा-वृंदावन से संबंधित परियोजनाओं का प्रस्तुतीकरण तात्कालीन अपर मुख्य सचिव (गृह) अवनीश अवस्थी और उपाध्यक्ष, ब्रज तीर्थ विकास परिषद शैलजा कांत मिश्र द्वारा किया गया।

ब्रज चौरासी कोस परिक्रमा मार्ग के निर्माण के अलावा मथुरा वृंदावन और गोवर्धन के लिए अलग बाईपास बनाने पर विचार है। ये ब्रज तीर्थ पथ परियोजना एवं गोवर्धन कनेक्ट परियोजना का ही एकीकृत रूप है। योजना के अनुसार जैंत गांव से वृंदावन जाने के लिए रास्ता चौड़ा होगा। वहीं मांट क्षेत्र में यमुना पर पुल बन रहा है। वृंदावन से मथुरा एवं मथुरा से गोकुल, गोकुल से वापस नेशनल हाईवे पर रिफाइनरी के पास रोड को जोड़ने की योजना पर भी काम चल रहा है। यमुना पर अलग पुल बनने से दर्शनार्थियों को बिहारी जी व द्वारिकाधीश मंदिर आदि जगहों पर पहुंचने के लिए ट्रैफिक से राहत दिलाने की योजना पर काम प्रारंभ हो चुका है।

परियोजना के तहत मांट क्षेत्र में यमुना नदी पर अपर में और यमुना के लोअर में पानीगांव के पास दो पुल बनाये जाने का प्राविधान है। ये पुल 6 लेन के होंगे ताकि भविष्य में ये उपयुक्त साबित हों।

एक अन्य योजना के अनुसार गोवर्धन ड्रेन की दोनों पटरियों को रोड में बदलने की योजना है। इस ड्रेन की पटरी पक्की होती हैं तो बरसाना, गोवर्धन से आगरा के लिए सीधे ही रास्ता सुलभ होगा। ड्रेन का पानी हिन्दुस्तान कॉलेज के पास नेशनल हाईवे से कनेक्ट होकर यमुना में पहुंचता है।

पटरी पक्की होने से आगरा से श्रद्धालु सीधे गोवर्धन व बरसाना पहुंच सकेंगे। उन्हें गोवर्धन और मथुरा में प्रवेश नहीं करना पड़ेगा। वाहन भी आगरा एवं कानपुर की ओर आ जा सकेंगे। मथुरा में यातायात का दबाव कम होगा।

एक्सप्रेस-वे से बांकेबिहारी जी तक सिर्फ दस मिनट में

आधुनिकता और आस्था का नगर होगा न्यू वृंदावन

यमुना एक्सप्रेस वे से वृंदावन स्थित बांके बिहारी मंदिर तक लगभग 7 किलोमीटर लंबे और 100 मीटर चौड़ी हाईवे को पुराने वृंदावन से जोड़ने की योजना पर काम प्रारंभ हो गया है। छह लेन के इस हाइवे (वृंदावन हेरिटेज कॉरिडोर) के दोनों ओर हेरिटेज सिटी बसाने की संशोधित प्लानिंग है। इस हाइवे के बनने से एक्सप्रेस-वे से बिहारीजी तक पहुंचने वाले तीर्थयात्रियों को सिर्फ 10 मिनट का समय लगेगा।

इसके अलावा न्यू वृंदावन बसाने की योजना पर भी कार्य चल रहा है इसकी डीपीआर तैयार हो चुकी है। नोएडा में फिल्म सिटी की डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करने वाली अमेरिकी कंपनी सीबीआरई ने पहले हेरिटेज सिटी नाम से बसाए जाने वाले न्यू वृंदावन की डीपीआर बनायी है। इसी कंपनी ने यमुना एक्सप्रेस-वे से वृंदावन तक बनाए जाने वाले वृंदावन हेरिटेज कॉरिडोर की डीपीआर तैयार की है।

अमेरिकी कंपनी ने वियतनाम और मलेशिया के शहरों का अध्ययन कर न्यू वृंदावन (हेरिटेज सिटी) को 9350 हेक्टेयर में बसाने का प्लान तैयार किया है। पहले चरण में 731 हेक्टेयर में टूरिज्म जोन और 110 हेक्टेयर में रिवर फ्रंट विकसित होगा। यमुना नदी के किनारे रिवर फ्रंट भी यही अथारिटी तैयार करेगी। यद्यपि डीपीआर बनने तक कई बार उसमें संशोधन हो चुका है।

अमेरिकन कंपनी ने ही न्यू वृंदावन में श्रीकृष्ण के द्वापर कालीन इतिहास और लाइट एंड साउंड शो के जरिए कृष्ण लीला दिखाने की प्लानिंग की है। श्रीमद्भगवद गीता के वाचन के लिए अलग से केंद्र बनाए जाने, न्यू वृंदावन में अध्यात्म म्यूजियम बनाने का ड्राफ्ट भी सीबीआरई कंपनी ने यमुना प्राधिकरण को सौंपा है। ये डीपीआर यूपी सरकार के पास भेजी गयी है। इसके बाद इस सिटी को विकसित करने के लिए आगे की कार्रवाई शुरू होगी। न्यू वृंदावन में होटल, रिजॉर्ट, वेलनेस सेंटर और एंडवेंचर विकसित होंगे किंतु सबसे पहले पर्यटन जोन और रिवर फ्रंट विकसित करने की योजना है।

यमुना में वृन्दावन से गोकुल तक जल मार्ग की तैयारी

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ जून माह में केंद्र सरकार के आधा दर्जन मंत्रियों की महत्वपूर्ण बैठक दिल्ली में केंद्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी की अध्यक्षता में हुई। बैठक में वृंदावन से गोकुल तक यमुना में जलमार्ग विकसित करने की संभावना पर जो विचार किया गया, उसका क्रियान्वयन भी शुरू होने जा रहा है।

केंद्रीय जहाजरानी एवं जल मार्ग मंत्री सवार्नंद सोनवाल ने मुख्यमंत्री को बताया था कि उनका मंत्रालय वृंदावन से गोकुल तक यमुना में जल मार्ग बनाएगा परन्तु नौका एवं उसके संचालन का काम प्रदेश सरकार करेगी।

upbtvp
उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद
सांस्कृतिक धरोहर की पुनर्प्रतिष्ठा

UP Braj Teerth Vikas Parishad has been constituted under the Uttar Pradesh Braj Niyojan Aur Vikas Board (sanshodhan) Adhiniyam 2017 (U.P. Act No. 3 of 2017) for the preparation of a plan for preserving, developing and maintaining the aesthetic quality of Braj heritage in all hues - cultural, ecological and architectural, co-coordinating and monitoring the implementation of such plan and for evolving harmonized policies for integrated tourism development and Heritage conservation and management in the region, giving advice and guidance to any department/local body/authority in the district of Mathura in respect of any plan, project or development proposals which affects or is likely to affect the heritage resource of the Braj Region and for matters connected here with or incidental there to.

मथुरा डॉक पंजीयन संख्या-070/2022-24 पंजीयन संख्या UPHIN 2003/11917

उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद

upbtvp

सांस्कृतिक धरोहर की पुनर्प्रतिष्ठा